1. बीरबहूटी PART - 1 (बीरबहूटियों को खोजना)

1. बीरबहूटी कहानी के मुख्य पात्र कौन-कौन हैं ?
   साहिल और बेला
2. साहिल और बेला स्कूल केलिए घर से कुछ समय पहले निकल आते थे । क्यों ?
   बीरबहूटियों से मिलने केलिए
3. दोनों कब और कहाँ बीरबहूटियों को खोजते थे ?
   बारिश के मौसम में सुबह स्कूल जाते समय, कस्बे से सटे खेतों में
4.बीरबहूटियों की विशेषताएँ क्या-क्या थीं ?
   बीरबहूटियाँ सुर्ख, मुलायम, गदबदी और धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी थीं ।
5. बेला और साहिल बीरबहूटियों को कैसे खोजते थे ?
   एक दूसरे के बहुत नज़दीक रहकर, बिलकुल सटकर

6. टिप्पणी – सच्ची मित्रता

जीवन में दोस्ती का स्थान महत्वपूर्ण है । दो व्यक्तियों के बीच का आत्मसंबंध दोस्ती का आधार है । एक कहावत है यदि आपका मित्र अच्छा है तो आपको दर्पण की कोई आवश्यकता नहीं है । दोस्तों को चुनते समय हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए । क्योंकि कुछ लोगों की मित्रता सच्ची नहीं होती । असली दोस्ती में एक दूसरे को पूर्ण रूप से जानता है , अपनी बातें बिना कोई हिचक से दूसरे से बाँटते हैं । सच्चा मित्र मिलना बडे सौभाग्य की बात होती है । सच्चा मित्र किसी भी आपत्ति में अपने मित्र को छोडकर नहीं जाता । वे सुख में हो या दुख में साथ रहते हैं । सच्ची मित्रता में जाति , धर्म आदि किसी भी भेदभाव की भावना नहीं होती । सच्चे मित्रों से अलग होना बहुत दुखदायक होता है । समाज में जीने केलिए अच्छी दोस्ती बहुत सहायक होता है ।

7. पटकथा (बीरबहूटियों को खोजना)

स्थान – कस्बे से सटा खेत।

समय – सुबह 9 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है । चेहरे पर खुशी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है । चेहरे पर खुशी है ।

दृश्य का विवरण – दोनों बच्चे, स्कूल में जाते समय कस्बे से सटे खेतों में बीरबहूटियों को खोजने आए हैं ।

संवाद -

बेला – देखो साहिल, यहाँ कितनी बीरबहूटियाँ हैं !

साहिल – हाँ, मैंने देखा । इसका रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है ।

बेला - ठीक है । ये कितने सुर्ख, मुलायम और गदबदी हैं ! धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी … ।

साहिल – तुमने कुछ सुना बेला ?

बेला - हाँ सुना, स्कूल में पहली घंटी लग गई है । तो हम जाएँ, बहुत देर लगी है ।

साहिल – लेकिन मुझे दुकान से पैन में स्याही भी भरवानी है ।

बेला - तू क्या बोलता है यार ? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाए तो ?

साहिल – नहीं बेला, स्कूल के नज़दीक के दूकान से ही भरवानी है ।

बेला - ठीक है साहिल । तो जल्दी चलें ।
(खेत की ज़मीन से उठकर दोनों बस्ते और वर्दी ठीक करके दुकान की ओर जाने लगते हैं ।)

PART - 2 (पैन में स्याही भरवाने दुकान जाना)

1. बेला और साहिल दुकान क्यों गये ?
   पैन में नई स्याही भरवाने केलिए
2. ‘ पैन में नई स्याही भरवाने केलिए साहिल और बेला दुकान पहुँचे । पर उन्हें निराशा लौटना पडा ।‘- क्यों ?
   दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी । इसलिए उन्हें निराश लौटना पडा ।
3.‘ बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ‘ - दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा ?
   साहिल ने पैन में नई स्याही भरवाने की इच्छा से उसमें बची स्याही को जमीन पर छिडक दिया । दुकान पहुँचने पर वहाँ स्याही नहीं थी । तब दुकानदार ने साहिल से ऐसा कहा । कहने का मतलब है, किसी वस्तु को मिलने की प्रतीक्षा में हमारे पास के वस्तु को छोडना मूर्खता है । बिना सोच विचार करके कुछ नहीं करना चाहिए ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR145 Ph: 9567224545

4. पटकथा- (पैन में स्याही भरवाने दूकान में)

स्थान - गाँव की स्टेशनरी की दुकान ।
समय - सुबह 10 बजे ।
पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है ।
3. दुकानदार, करीब 50 साल के आदमी, धोती और कुर्ता पहने हैं ।
दृश्य का विवरण - बेला और साहिल पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान के पास खडे हैं ।

संवाद -

दुकानदार - अरे बच्चे, क्या चाहिए ?
बेला - अंकिल, एक पैन स्याही भर दो ।
दुकानदार - बेटा, स्याही की बोतल अभी-अभी खाली गई है । अब तो कल ही मिल पाएगी ।
साहिल - बाप रे ! अब मैं क्या करूँ ?
बेला - क्या हुआ बेटा ?
बेला - इसने पैन में बची हुई स्याही को ज़मीन पर छिडक दिया ।
दुकानदार - (हँसते हुए) बेटा, बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ।
साहिल - आज मैं कैसे स्कूल जाऊँ ?
दुकानदार - बेटा, स्याही कल मिलेगी । कौन - सी कक्षा में पढते हो तुम ?
साहिल - (बुरे मन से) पाँचवीं में ।
दुकानदार - दोनों ?
बेला - (खुशी से) हाँ, हम दोनों एक ही सेक्शन में पढते हैं । स्कूल का समय हो गया अंकिल, हम चलते हैं ।
दुकानदार - तो कल आओ बेटे, तब स्याही ज़रूर मिलेगी ।
बेला - ठीक है अंकिल । (चलते हुए) साहिल अब हम क्या करेंगे ?
साहिल - चलो, किसीसे उधार लेंगे ।
(दोनों बच्चे निराश होकर दुकान से बाहर आते हैं ।)

PART - 3 (बेला के साथ सुरेंदर माटसाब का बुरा व्यवहार)

1. बच्चे सुरेंदर माटसाब से क्यों डरते थे?
कॉपी जाँचते समय उसमें ज़रा सी गलती होने पर वे बच्चों को इधर उधर फेंक देते थे या झापड मारने लगते थे ।

2. ' गणित के माटसाब छात्रों को ज़रा-सी गलती पर इधर- उधर फेंक देते थे ।' - उसपर अपना विचार लिखें ।
छात्रों से अगर कोई गलती हुई तो प्यार भरी बातें कहकर उन्हें सुधारना चाहिए । गलती सुधारने में गुस्सा करना कभी ठीक नहीं है । ऐसा करने पर उस अध्यापक के प्रति हमेशा उनके मन में भय रहेगा । यह एक अच्छे अध्यापक केलिए लायक नहीं । शरारती बच्चों को भी प्यार भरी व्यवहार करके बदलना चाहिए ।

3. ' बेला खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी ।'- इसके क्या–क्या कारण हैं ?
बेला जानती थी अपनी दिली दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है । उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी । लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी । इसलिए उसे शरम आया ।

4.' माटसाब चाहे मुझे पीट लेते मगर साहिल के सामने नहीं ।'- बेला ऐसा क्यों सोचती है ?
बेला जानती थी कि अपने दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी है । साहिल के सामने वह अपमानित होना नहीं चाहती थी । इसलिए वह ऐसा सोचती है ।

5. ' बेला का मन बहुत खराब हो गया ।'- क्यों ?
साहिल के सामने गणित के माटसाब ने गलती से बेला के बालों में पंजा फँसाया । उसे अच्छी माननेवाले साहिल के सामने यह व्यवहार होने से बेला का मन बहुत खराब हो गया ।

6. जब वह उसके पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई । क्यों ?
बेला जानती थी अपनी दिल दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है । उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी । लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी । इस कारण उसे शरम आया । इसलिए बेला साहिल के पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45 ph- 9567224545

7. बेला की डायरी - गणित के माटसाब से हुए बुरे व्यवहार के बारे में

तारीख: …………………..

आज मुझे बहुत दुख का दिन था । गणित के माटसाब सुरेंदर जी मेरी कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर उन्होंने मेरे बालों मे पंजा फँसाया । लेकिन वह गलती न होने पर उन्होंने मुझे छोड दिया । मैं बहुत डर गयी थी । मेरे हाथ पैर काँप रहे थे । मुझे भयभीत होते देखकर साहिल भी बुरी तरह डर गया । माटसाब ने कॉपी मेरे बैठने की जगह पर फेंककर मुझे वहाँ जाकर बैठने को कहा । मुझे बहुत शरम आया । इसलिए मैं साहिल से नजर नहीं मिला पाई । क्या करूँ अगर कॉपी में गलती होती तो मेरी क्या हालत होती ? सोच भी नहीं सकती । घर पहुँचने पर भी मेरा मन दुख से भरा था । आज का यह बुरा दिन मैं जिंदगी भर याद रखूँगी ।

8. वार्तालाप – साहिल और बेला (माटसाब का व्यवहार)

साहिल - बेला, तुम दुखी है क्या ?
बेला - कुछ नहीं ।
साहिल - अरे, तुम जानती हो न माटसाब ऐसा ही हैं ।
बेला - मैंने कोई गलती नहीं की थी । फिर भी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया ।
साहिल - हाँ, वे भी जानते थे । इसलिए तुम्हें छोड दिया ।
बेला - मैं सचमुच डर गई थी ।
साहिल - हाँ, मैं भी डर गया था ।
बेला - मेरे पाँव काँप रहे थे । मुझे लगा कि मैं गिर जाऊँगी ।
साहिल - मैं तुम्हें देख रहा था ।
बेला - मैं बहुत लज्जित हूँ … सबको मुँह कैसे दिखाउँ ? अकारण मुझे पीटने केलिए वे एक सोरी तो बोल सकते थे … पर ।
साहिल - तुम इस घटना को भूलो ।
बेला - पर … मैं दुख सह न पाती । घर जाकर माँ से यह बात ज़रूर बताऊँगी ।
साहिल - ज़रूर बताना । अब खुशी से घर जाओ ।
बेला - ठीक है साहिल, मैं कोशिश करूँगी ।

9. बेला और माँ के बीच हुए वार्तालाप - घर पहुँचने पर माटसाब के व्यवहार के बारे में

माँ - क्या हुआ बेटी, बहुत परेशान दिखती हो ?
बेला - क्या कहूँ माँ, आज स्कूल में एक घटना हुई ।
माँ - किसीके साथ झगडा हुआ होगा ?
बेला - नहीं । गणित के माटसाब ने मेरे बालों में पंजा फँसाया ।
माँ - सुरेंदर जी ! तुमने जरूर कोई गलती की होगी ।
बेला - नहीं माँ । मैंने जो लिखा था वह ठीक ही था ।
माँ - छोड दो । मास्टर जी है न ?
बेला - लेकिन साहिल के सामने वह अपमान मैं सह न सकी ।
माँ - कोई बात नहीं । वह तुम्हें अच्छी तरह समझता है ।

PART - 4 (दीपावली के बाद स्कूल खुलना, गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलना)

1. बेला के सिर पर चोट कैसे लगी ?
छत से गिर जाने के कारण

2. साहिल के परेशान होने का कारण क्या था ?
दीपावली की छुट्टियों के बादस्कूल खुला तो बेला के सिर पर पट्टी बाँधी थी । कोई उसे सफेद पट्टी कह रहा था तो कोई सुल्ताना डाकू तो कोई कुछ और कहकर चिढा रहा था । बेला की यह हालत देखकर साहिल परेशान हो गया ।

3. बेला और साहिल गाँधी चौक क्यों गए थे ?
लंगडी टाँग खेलने केलिए

4.' इन बच्चों को अपने चारों ओर खेलते देखकर गाँधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पडती जैसे और सयय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो ।'- इसका मतलब क्या है ?
गाँधीजी बच्चों को बहुत प्यार करते थे । इसलिए बच्चे जब निष्कलंकता और प्यार भरी दोस्ती के साथ अपनी मूर्ति की चारों ओर खेलने लगे तो उसे अधिक प्रसन्नता हुई होगी ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45 ph- 9567224545

5. पटकथा - 4 (गाँधी चौक के लंगडी टाँग खेल)

स्थान – स्कूल का मैदान ।

समय – सुबह 10 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है ।

दृश्य का विवरण– दीपावली के बाद स्कूल खुला तो बेला के सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । यह देखकर साहिल उसकेपास आता है ।

संवाद -

साहिल - (परेशान होकर) तेरे सिर पर यह क्या हो गया बेला ?

बेला - (हँसकर) छत से गिर जाने से चोट लग गयी ।

साहिल - यह कब हुआ ?

बेला - बहुत दिन हो गए ।

साहिल - अब दर्द है क्या ?

बेला - नहीं । आज खेल घंटी में हम गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलेंगे ।

साहिल - नहीं खेलेंगे ।तेरे सिर में फिर से चोट लग जाएगी तो ...?

बेला - (ज़िद करते हुए) नहीं लगेगी ।

साहिल - तो ठीक है । अपनी मर्जी ।
(दोनों खुशी से कक्षा में जाकर बैठते हैं ।)

PART - 5 (रविवार का दिन, साहिल पिंडली में चोट लगने अस्पताल में)

1. साहिल को क्यों अस्पताल ले जाया गया ?
उसकी पिंडली में कील लगने से हुई चोट को पट्टी बँधवाने केलिए

2. बेला क्यों अस्पताल आई है ?
सिर पर पट्टी बँधवाने केलिए

3. वार्तालाप (अस्पताल में, साहिल और बेला के बीच)

साहिल - हाय बेला, यहाँ क्यों आई हो ?

बेला - हाय साहिल, मैं तो सिर पर पट्टी बँधवाने आई है । क्या हुआ तुमको ?

साहिल – मेरी पिंडली में चोट लग गई है ।

बेला - कैसे ?

साहिल – स्टूल पर चढकर नीम की डाली पकडकर झूलते वक्त स्टूल टूटने से एक कील मेरी पिंडली में लग गई ।

बेला - डॉक्टर ने क्या कहा ?

साहिल – उन्होंने कहा घबराने की कोई बात नहीं । कुछ दिनों के बाद पट्टी खोलेंगे ।

बेला - दर्द ज़्यादा है क्या ?

साहिल – अब दर्द कुछ कम हुआ है ।

बेला - अच्छा मैं जाती हूँ, नर्स बुला रही है । बाई ।

साहिल – ठीक है बेला, बाई ।

PART - 6 (पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आना, दोनों की बिछुडाई)

1. साहिल और बेला को दूसरे स्कूल क्यों जाना पडा ?
साहिल और बेला फुलेरा के जिस स्कूल में पढते हैं वह पाँचवीं तक का है । इसलिए पाँचवीं पास हुए साहिल और बेला को आगे की पढाई केलिए दूसरे स्कूल में जाना पडता है ।

2.' आज आखिरी बारी वे एक दूसरे की कोई चीज़ को छूकर देख रहे थे ।'- इससे आपने क्या समझा?
पाँचवीं तक एक मन से हर काम लेनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग अलग स्कूलों में भर्ती होनेवाले हैं, यानी वे बिछुड रहे हैं । इस कारण दोनों पहले की तरह कुछ कर न पाएँगे,मिल न पाएँगे । इसलिए ऐसा कहा होगा ।

3. ' यह बारिशों से पहले की बारिश का दिन था ।' कहानी के प्रसंग में यह कैसे सार्थक होता है ?
हमेशा एकसाथ चलनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग हो जानेवाले हैं । इस बिछुडन के बारे में आपस में बताकर दोनों दुखी हुए और उनकी आँखें भर गयीं । यह लेखक को बारिश से पहले की बारिश लगी ।

4. टिप्पणी – साहिल और बेला की दोस्ती

साहिल और बेला प्रभात की कहानी बीरबहूटी के मुख्य पात्र हैं। वे दोनों फुलेरा गाँव के पाँचवीं कक्षा में पढनेवाले छात्र हैं। वे एक साथ स्कूल आते-जाते हैं। बीरबहूटियों को खोजने केलिए और खेलने केलिए एक साथ निकलते हैं। दोनों एक ही क्लास में पढते हैं, एक ही बेंच पर पास-पास बैठते हैं। कक्षा में साहिल जो करता है वही बेला भी करती है। एक साथ कॉपी लिखते हैं। किताब पढते तो दोनों किताब पढते, पाठ भी एक ही पढते। एक साथ पानी पीने चले जाते हैं। वे पास-पास रहते हैं। दोनों अच्छे दोस्त हैं। एक का दुख दूसरे का भी है। सुरेंदर जी माटसाब बेला के बालों में पंजा फँसाने पर साहिल दुखी हो जाता है। छत से गिरकर बेला के सिर पर चोट लगने पर भी। साहिल की पिंडली में कील लग जाने पर बेला भी बहुत दुखी हो जाती है। पाँचवीं का रिज़ल्ट आया तो छठी कक्षा में दोनों अलग-अलग स्कूलों में पढने जाने की बात सोचकर बेला को रुलाई आई तो साहिल की आँखें भी लाल हो गईं। दोनों आपस में सांत्वना देते हैं। इस प्रकार दोनों की अनुपम दोस्ती हम देख सकते हैं।

5. बेला की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक प्रभात की सुंदर कहानी बीरबहूटी का मुख्य पात्र है बेला नामक ग्यारह साल की लडकी। वह फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढती है। उसका दोस्त है साहिल। दोनों अच्छे दोस्त हैं, वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं। दोनों एक ही कक्षा में पढते थे। साथ-साथ स्कूल आते-जाते हैं, रास्ते के खेत में बीरबहूटियों को खोजते हैं और खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टांग खेलते हैं। बाकी छात्रों के नज़र में बेला एक अच्छी लडकी है। एक दिन गणित के माटसाब ने कॉपी जाँचते समय उसमें गलती पाकर उसका अपमान करते तो वह बहुत उदास हो जाती है। पाँचवीं के रिज़ल्ट आने पर दोनों अगले साल बिछुड जाने के बात को लेकर दोनों दुखी हो जाते हैं। बेला में हम एक सरस स्वभाववाली, मित्रता निभानेवाली, स्वाभिमानी लडकी को देख सकते हैं।

6. पटकथा (पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट आने पर)

स्थान – फुलेरा कस्बे की एक गली।

समय – सुबह 11 बजे।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है।

दृश्य का विवरण – दोनों पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट जानने के बाद दुखी मन से गली की एक पेड के नीचे खडे हैं।

संवाद -

साहिल - तुमने हमारा रिज़ल्ट देखा ?

बेला - हाँ देखा, हम दोनों पास हो गए हैं। लेकिन मैं खुश नहीं हूँ।

साहिल - क्यों ? तुम बहुत दुखी दिखती हो।

बेला - हाँ साहिल, आगे हमें एक साथ पढने का अवसर नहीं मिलेगा। यह सोचकर ...

साहिल - मै वह बात भूल गया। अगले साल तुम कहाँ पढोगी ?

बेला - पापा मुझे अगले साल राजकीय कन्या पाठशाला में पढाएँगे। और तुम ?

साहिल - मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे। वहाँ एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा।

बेला - क्या अब तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे ?

साहिल - नहीं यार। तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दो।

बेला - यह है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दो।
(दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं।)

7. पटकथा (रिपोर्ट कार्ड देखने के बाद)

स्थान - स्कूल से घर जाने का रास्ता।

समय - सुबह के 10 बजे।

पात्र - 1. साहिल, करीब 11 साल का, पतलून और कमीज़ पहना है।
2. बेला, करीब 11 साल की, फ्रॉक पहनी है।

घटना का विवरण - साहिल और बेला दोनों किसी चिंता में मग्न है। वे आपस में बातें करने लगे।

संवाद –

साहिल – बेला, ज़रा तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दो।

बेला - यह है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दो। (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं।)

साहिल – तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं ?

बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता ? अब तेरी आँखों में भी आँसू क्यों भरे ?

साहिल – मुझे भी नहीं पता।

बेला - क्या मैं चिढाऊँ अब तुम्हें ? रोनी सूरत साहिल रोनी सूरत साहिल। दुखी मत हो साहिल, हम छुट्टी के दिनों में मिला करेंगे।

SREEJITH R KOVOOR VARKALA, SCRIHS ph- 9567211545

साहिल – तुमने सही कहा । अब हम घर चलें ।
बेला - ठीक है । फिर मिलेंगे ।
(दोनों अलग-अलग रोस्ते से चले जाते हैं ।)

8. रिज़ल्ट जानकर घर आने पर साहिल और माँ के बीच हुए वार्तालाप

माँ - क्या हुआ बेटा ? बहुत परेशान दिखते हो ।
साहिल - बेला आगे मेरे साथ नहीं होगी न ?
माँ - नहीं बेटा । अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी ।
साहिल - मैं अजमेर में । ऐसा है न माँ ?
माँ - हाँ बेटा । तुम्हारे पिता ने कहा था ।
साहिल - बेला के बिना मैं कैसे रहूँ माँ ?
माँ - बेटा, बेला जैसे दोस्त तुम्हें वहाँ भी मिलेगा ।
साहिल - मुझे नहीं लगता । क्या बेला मुझे भूलेगा ?
माँ - अच्छी दोस्ती कभी नहीं छूटेगा बेटा ।
साहिल - ठीक है माँ ।

9. साहिल की डायरी (रिज़ल्ट दिवस की)

तारीख: ……………….

आज स्कूल का मेरा अंतिम दिन था । कितनी जल्दी पिछले पाँच साल बीत गये । अब मैं छठी कक्षा मे आ गया हूँ । आज संतोष के साथ दुख भी है । बचपन के दोस्त बेला से बिछुडने की वेदना मन में दर्द पैदा किया । आज उसकी आँखों में पहली बार मैंने आँसू देखा । मेरी भी आँखें भर गई थीं । बेला के साथ की स्कूल शिक्षा मैं कभी नहीं भूलूँगा । वह बहुत प्यारी और दिली दोस्त थी । फुलेरा के स्कूल पाँचवीं तक होने के कारण पिताजी ने मुझे अजमेर भेजने का निर्णय लिया था । वह तो अगले साल राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी ।

10. बेला का पत्र साहिल को (अजमेर के स्कूल के बारे में)

स्थान: ……………….
तारीख: ……………….

प्रिय बेला,

तुम कैसी हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

अब तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? अजमेर का तुम्हारा नया स्कूल कैसा है ? वहाँ कोई नयी दोस्त मिली है क्या ? हॉस्टल स्कूल पास ही है न ? तुम्हारा नया स्कूल फुलेरा का स्कूल जैसा है क्या ? तुम्हें पुराने स्कूल की याद कभी आती है ? अपने बारे में कहे तो मेरा नया स्कूल बहुत अच्छी है । वहाँ मुझे कई दोस्त मिले हैं । मुझे हमेशा तुम्हारी याद आती हैं । पहले की तरह हम कब खेत में बीरबहूटियों को खोजेंगे ? तुम्हारे स्कूल के गणित के माटसाब सुरेंदरजी जैसा नहीं है न ? सारी बातें विशद रूप से ज़रूर लिखना ।

वहाँ की तुम्हारी खबर विशद रूप से लिखना । अगली छुट्टी में हम मिलें । तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

11. साहिल का पत्र बेला को (नए स्कूल के बारे में)

स्थान : ……………….
तारीख : ……………….

प्रिय बेला,

तुम कैसी हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

परसों मैं इधर पहुँचा । यात्रा बहुत मुश्किल थी । गाडी में बडी भीड थी । कल यहाँ के स्कूल में मेरी भर्ती हुई । स्कूल होस्टल से आधा किलोमीटर दूर पर है । बडा स्कूल है । बडे बडे कमरे और मैदान । आँगन का बगीचा तरह तरह के फूलों से बहुत खूबसूरत है । कल सुबह स्कूल खुलेगा । होस्टल में पचास से अधिक छात्र हैं । कमरे में मेरा सहवासी है गणेश । वह आगरा से है । स्कूल जाने के लिए यहाँ से गाडी है । यहाँ की सडकें तो गाडियों से भरी हैं । कल शाम हम घूमने गए । इलाका बहुत सुंदर है । फुलेरा कितना छोटा है । यहाँ छोटी बडी दूकानें, बैंक, सिनेमाघर, मंदिर, मस्जिद सब कुछ हैं । यहाँ के लोग सदा व्यस्त हैं ।

आच्छा, वहाँ कैसे चल रहा है ? सब ठीक हैं न ? नया स्कूल कैसा है ? कल रात में भी मैंने बीरबहूटियों को खोजने का सपना देखा । वहाँ की तुम्हारी खबर विशद रूप से लिखना । अगली छुट्टी में हम मिलें । तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRIPT, Ph- 9567224545

2. हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था PART - 1 (कविता)

1. कवि ने रास्ते पर किसको देखा ?
   अपरिचित/ हताश व्यक्ति को
2. कवि हताश व्यक्ति के पास क्यों गया ?
   क्योंकि कवि उसकी हताश को जानता था ।
3. व्यक्ति की हालत समझकर कवि ने क्या किया ?
   कवि ने उस व्यक्ति के पास गया और उसकी ओर हाथ बढाया ।
4. कवि ने उस व्यक्ति के सामने क्यों हाथ बढाया ?
   व्यक्ति की समस्या पहचानकर उसकी सहायता करने केलिए
5. हताश व्यक्ति ने कवि का हाथ क्यों पकडा ?
   क्योंकि वह कवि के हाथ बढाने को जानता था ।
6. कवि ने हाथ बढाया तो उस व्यक्ति ने क्या किया ?
   व्यक्ति ने कवि का हाथ पकडा और उनके साथ चलने लगा ।
7. ' व्यक्ति को मैं नहीं जानता था '- इससे कवि क्या कहना चाहते हैं ?
   हमें किसीको वैयक्तिगत (व्यक्तिगत) रूप से यानी उसके नाम, पता, उम्र, ओहदा, जाति आदि से जानना नहीं चाहिए ।
8. ' मैं उसकी हताशा को जानता था '- इससे कवि क्या कहना चाहते हैं ?
   हमें किसीको उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि से जानना चाहिए ।
9. 'अपरिचित होने पर भी कवि ने हताश व्यक्ति की सहायता की ।'- इससे क्या संदेश मिलता है ?
   किसी व्यक्ति की सहायता करने केलिए उसको व्यक्तिगत रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है । उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि को पहचानना ही असली जानना है । दो मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना चाहिए ।

10. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ समकालीन हिंदी साहित्य के विख्यात कवि श्री. विनोद कुमार शुक्ल की सुंदर कविता हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था से ली गई हैं । इस कविता में कवि जानना शब्द की हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देते हैं ।

कवि कहते हैं कि सडक पर हताशा से बैठे एक अपरिचित व्यक्ति को देखते ही कवि उसकी समस्या को जल्दी पहचान लेते हैं । इसलिए उसकी सहायता करने केलिए उसकी ओर हाथ बढाते हैं । कवि के हाथ पकडकर वह खडा हुआ । कवि को वह नहीं जानता था, पर कवि के हाथ बढाने को जानता था । दोनों साथ-साथ चले । यानी कवि व्यक्ति को जानने के बदले उसकी समस्या को पहचाने । कवि का कहना है कि अकसर हम दूसरों को उनके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि के द्वारा जानते हैं । लेकिन असल में किसीको जानना है तो उसकी हताशा,निराशा, असहायता या संकट को जानना ही काफी होगा । किसीको व्यक्तिगत रूप से जानना और उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि से जानना दोनों अलग है । मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको वैयक्तिगत (व्यक्तिगत) रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है । सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है । यहाँ कवि मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की याद दिलाती है । कविता का संदेश है कि मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं ।

जानना शब्द को एक विशेष अर्थ प्रस्तुत करनेवाली इस कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है । कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है । गद्य में लिखी हुई इस कविता में गीतात्मकता का बोध खूब मिलता है । यह कविता कोई लोकगीत जैसा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है । जानता था और नहीं जानता था का प्रयोग अधिक आकर्षक बना है ।

PART - 2 (टिप्पणी)

1. ' जानना ' शब्द का परंपरागत अर्थ यानी हमारी जानी-पहचानी रूढी क्या है ?
   व्यक्ति को उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से जानना ।
2. किसीको जानने केलिए हमें क्या करना चाहिए ?
   हमें उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट को जानना चाहिए ।
3. कविता पर टिप्पणी लिखते समय हमें किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ?
   कवि और कविता का परिचय, कविता का आशय, भाषापरक विशेषताएँ और कविता की प्रासंगिकता पर अपना विचार ।
4. ' जानना ' शब्द की लेखक की व्याखा से आप कहाँ तक सहमत हैं ?
   जानना शब्द की लेखक की व्याख्या से मैं सहमत हूँ । अकसर हम दूसरों को उसके नाम , पते , उम्र , ओहदे या जाति से ही जानते हैं । लेकिन सच में किसीको जानना है तो उसके दर्द और एहसास को समझना चाहिए । उसकी हताशा , असहायता , दुख और कठिनाई को जाने बिना जानना कभी पूर्ण नहीं होता ।
5. कविता के शिल्प पक्ष पर लेखक के क्या–क्या निरीक्षण हैं ?
   लेखक की राय में कविता का शिल्प पक्ष एकदम बारीक है । गद्य में लिखी हुई इस कविता में लिरिकल या गीतात्मकता का बोध भी खूब मिलता है । यह कविता कोई लोकगीत या गज़ल जैसा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है । ' जानता था ' और ' नहीं जानता था ' का प्रयोग अधिक आकर्षक बना है ।

6. रपट - सडक दुर्घटना में एक व्यक्ति घायल पडा । किसीने उसकी सहायता नहीं की । बहुत समय तक वह सडक पर ही पडा रहा ।

घायल आदमी पडे रहे लंबी देर सडक पर

स्थान : ------- कल शाम को किसी अज्ञात गाडी के टकराने से घायल हुए एक आदमी बहुत समय सडक के किनारे ही पडा रहा । उसके शरीर से खून बह रहा था । उसका एक हाथ टूट गया था । सिर पर भी चोट लग गई थी । उसकी हालत बहुत नाजुक थी । बहुत लोग उसके पास से गुज़रे । पर किसीने उसकी सहायता करने की कोशिश नहीं की । कुछ लोग उसे देखे बिना चला गया तो कुछ उसे एक शो की तरह देखता रहा तो और कुछ उसकी फोटो खीचकर ज़्यादा लैक प्राप्त करने की कोशिश में लगे रहे । भाग्य से अंत में एक बूढा आदमी आकर उसे अस्पताल पहुँचाया । उनके अवसरोचित हस्तक्षेप से उसकी जान बच गई । इससे पता चलता है कि आज के ज़माने के लोगों में मनुष्यता बहुत कम देखने को मिलते हैं । वे अपने-अपने बारे में ही सोचते हैं । दूसरों की मदद करने में वे हिचकते हैं । यह तो बहुत खतरनाक स्थिति है ।

7. टिप्पणी- मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना है

समकालीन हिंदी कवि विनोद कुमार शुक्ल की हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था कविता पर नरेश सक्सेना लिखी टिप्पणी में जानना शब्द को एक विशेष अर्थ प्रस्तुत किया है । यह कविता हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देते हैं । मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको व्यक्तिगत रूप से जानने की ज़रूरत नहीं। किसीकी मदद करने केलिए उसकी दुख -दर्द और एहसास को समझना ही उचित होगा। यानीएक व्यक्ति को जानने केलिए उसके नाम , पते, उम्र, ओहदे, जाति अदि की ज़रूरत नहीं । उसकी हताशा , निराशा, असहायता या उसके संकट को जानना ही सच्चा जानना है। मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना चाहिए। सडक पर घायल पडे या मुसीबत में पडे अपरिचित व्यक्ति को देखकर उसकी मदद करना सच्चे मनुष्य का दायित्व है। व्यक्ति को जानने के बदले उसकी आवश्यकता या समस्या पहचानकर उसे ज़िंदगी की ओर वापस ले आना ही असली जानना है। अर्थात दो मनुष्यों के बीच मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना होना ज़रूरी है, जानकारियाँ ज़रूरी नहीं हैं ।

8. टिप्पणी – जीवन में मानवीय मूल्य का महत्व

हरेक व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का अत्यधिक महत्व है । हमारा व्यक्तित्व और चरित्र हमारे द्वारा बनाए गए मूल्यों के आधार पर बनता है । अच्छे मूल्य हमें समाज में दूसरों की ज़रूरतों के प्रति मानवीय और संवेदनशील बनाते हैं । मूल्य मनुष्य को मनुष्य बनाते हैं , इसके बिना एक आदमी जानवर से कम नहीं होगा । जीवन की समस्याओं से बचने में मानवीय मूल्य आम जनता की मदद करती है । हमें दूसरों की परेशानियाँ जानकर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए । जो विपत्ति के समय दूसरों की सहायता करता है , वही सच्चा मानव है । दूसरों की परेशानियों को हमें अपनी परेशानियाँ जैसा मानना चाहिए । हमें सहजीवियों के साथ करुणा एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए । दूसरों केलिए अपने जीवन तथा जीवन की सुविधाएँ तक त्यागनेवाले बहुत लोग आज भी हमारे ज़माने में रहते हैं । ऐसे लोग अमर बन जाते हैं । हम सब परस्पर सहायता करनेवाला हो तो समाज के हरेक प्यार -भरे जीवन बिता सकेंगे । संक्षेप में हम सभी को अच्छे मूल्यों को अपनाना चाहिए और आनेवाली पीढियों को भी इसका महत्व सिखाना चाहिए ।

9. पोस्टर (संदेश) points – अंगदान का महत्व

1. अंगदान जीवन दान... अंगदान जीवन में मुस्कान ।	2. अंगदान सर्वश्रेष्ठ दान... स्वर्ग में स्थान मिलने को करो अंगदान ।
3. अंधविश्वास को छोडिए... अंगदान में सहयोग दीजिए ।	4. मृत्यु के बाद दीजिए दूसरों को प्राण... आगे बढिए और कीजिए अंगदान ।
5. करो दान किड्नी, नेत्र, हृदय, जिगर और देह की... अपनी मृत्यु के बाद किसीको जीवित रहने को मदद करें ।	6. जीते जीते रक्तदान जाते जाते अंगदान और जाने के बाद नेत्रदान और देहदान।

विश्व अंगदान दिवस – अगस्त 13

3. टूटा पहिया PART – 1 (मैं रथ का ----- घिर जाए)

1. अभिमन्यु को दुस्साहसी क्यों कहा गया है ?

अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु केवल चक्रव्यूह में घुसने की विद्या ही जानता था । लेकिन उससे बाहर निकलने का रास्ता उसे पता नहीं था । फिर भी बिना सोचे शत्रुओं की चुनौती स्वीकार करके चक्रव्यूह के अंदर प्रवेश करके युद्ध करने तैयार हुआ । इसलिए अभिमन्यु को दुस्साहसी कहा गया है ।

2. कवि ने टूटा पहिए को मत फेंकने को क्यों कहा गया है ?

कवि के अनुसार जिस चीज़ को हम फालतू समझकर फेंक देते हैं,उसका कभी उपयोग करने का मौका आ सकता है । महाभारत युद्ध में महारथियों का मुकाबला करने में रथ के टूटे हुए पहिए का सहारा लिया था । उसी प्रकार शोषण से पीडित आम जनता केलिए शासक वर्ग के अधर्म और अत्याचार के खिलाफ मानवीय मूल्य रूपी यह टूटा पहिया काम आएगा ।

3. कविताांश का आशय (मै रथ का टूटा हुआ पहिया .... अभिमन्यू आकर घिर जाए !)

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री . धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है । इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि मैं भले ही रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, किंतु मुझे अनुपयोगी मानकर मत फेंको। क्योंकि कौरवों से रचित दुरूह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ दुस्साहस के साथ अभिमन्यु आकर घिर जाएगा। यानी जीवन की समस्याएँ रूपी चक्रव्यूह में शोषण की अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ कोई शोषित मनुष्य अभिमन्यु के समान आ जाए तो टूटा पहिया, टूटे मानवीय मूल्य ही उसका सहारा बन जाएगा। यहाँ टूटा पहिया मानवीय मूल्यों का,चक्रव्यूह जीवन की समस्याओं का और अभिमन्यु शोषण से पीडित आम जनता का प्रतीक है।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

PART – 2 (अपने पक्ष को ----- लोहा ले सकता हूँ)

1. कविता में किसका पक्ष असत्य का है?

बडे बडे महारथी का (कौरवों का)

2. ब्रह्मास्त्रों से लोहा लेने में किसने अभिमन्यु की मदद की ?

टूटा पहिया ने

3. अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
बडे-बडे महारथी
अकेली निहत्थी आवाज को
अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें ! - **इन पंक्तियों के आशय पर चर्चा करें।**

अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी बडे बडे महारथियों ने अपने ब्रह्मास्त्रों से अभिमन्यु अकेली निहत्थी आवाज़ को कुचल डालना चाहा। शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति का दुरुपयोग करके आम जनता को कुचल डालना चाहता है।

4. तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथों में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ ! - **इन पंक्तियों में चर्चित पौराणिक संदर्भ वर्तमान परिवेश में कहाँ तक प्रासंगिक है ?**

चक्रव्यूह में फँसे निरायुध अभिमन्यु ने रथ के टूटे हुए पहिए से शत्रुओं के ब्रह्मास्त्रों का लोहा ले सकता है। उसी प्रकार शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के जरिए आम जनता पर अत्याचार करते समय इससे मुक्ति पाने केलिए उनको मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडेगा।

5. कवितांश का आशय (अपने पक्ष को असत्य .... लोहा ले सकता हूँ)

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **'श्री. धर्मवीर भारती'** की कविता संग्रह **'सात गीत वर्ष'** से चुनी गई 'टूटा पहिया' कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी बडे बडे महारथियों ने अपने ब्रह्मास्त्रों से अभिमन्यु अकेली निहत्थी आवाज़ को कुचल डालना चाहा। उस वक्त अभिमन्यु ने अपने रथे के टूटे हुए पहिए को हथियार बनाकर ब्रह्मास्त्रों से लोहा लिया था। शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति का दुरुपयोग करके आम जनता को कुचल डालना चाहता है। ऐसी अवसर पर मैं, रथ का टूटा पहिया मानवीय मूल्य बनकर निरायुध के हाथ में आ जाता हूँ और ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ। यहाँ महारथी शोषक वर्ग का और ब्रह्मास्त्र शोषक के हाथ की महाशक्ति का प्रतीक है।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

PART – 3 (इतिहासों की ----- आश्रय ले)

1. सच्चाई को किसका आश्रय लेना पडता है ?

टूटे हुए पहियों का

2. इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले ! **- इन पंक्तियों से कवि क्या बताना चाहते हैं ?**

आज के इस बदलते युग में भी इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है। तब सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा। इसलिए हमें टूटा पहिया रूपी मानवीय मूल्य की उपेक्षा नहीं करना चाहिए। मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा।

3. कवितांश का आशय (इतिहासों की .... आश्रय ले)

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री . धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है । इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है । उस समय सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हुआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा । यानी समाज में शोषण और असमत्व बढते वक्त आम जनता को मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडता है ।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।

4. आई एम कलाम के बहाने PART – 1

1. क्लास की दरीपट्टी पर लेखक और मोरपाल की जगहें साथ थीं । क्यों ?
   नाम का पहला अक्षर मिलने की वजह से
2. खेलघंटी में मिहिर और मोरपाल के बीच का सौदा क्या था ?
   खेल घंटी में खाने की अदला-बदली करने का
3. मोरपाल ने पहले कभी राजमा देखा भी नहीं था । कारण क्या होगा ?
   मोरपाल की गरीबी
4. मोरपाल केलिए खास चीज़ थी राजमा । क्यों?
   अपनी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था । इसलिए उसे राजमा देखने या खाने का अवसर नहीं मिला था ।
5. ' हमारा सौदा था घंटी में खाने की अदला-बदली का ।'- इस तरह की अदला बदली से हम क्या समझ पाते हैं ?
   सच्ची मित्रता का मिसाल यहाँ हम देख सकते हैं । दोनों के बीच आपस में ऊँच-नीच या अमीर-गरीब का कोई भेद भाव नहीं था । इसलिए मोरपाल को पसंद राजमा-चावल लेखक लाकर देता था और लेखक को पसंद छाछ मोरपाल भी लाकर देता था ।

6. मोरपाल की डायरी (पहली बार राजमा खाए दिवस)

तारीख: ....

आज मेरेलिए एक विशेष दिन था । पहली बार मैंने राजमा खाया । कितना स्वादिष्ठ था। खाने केलिए बैठने पर मेरे दोस्त मिहिर के टिफिन बॉक्स में रखे राजमा देखते ही मेरी बाँछें खिल गयी थीं । उसे खाने से पहले मैंने कभी राजमा देखा भी नहीं था । राजमा जैसी चीज़ मेरेलिए तो अपूर्व ही था, पर उसकेलिए वह एक साधारण चीज़ था । मैं और उसके बीच खेल घंटी में खाने की अदला बदली करने का निश्चय किया । उसके घर से लाया राजमा-चावल मैंने खाया और मेरे घर से लाया छाछ -चावल उसने भी । जैसे मैंने राजमा खाया, वैसे उसने छाछ को भी बहुत चाव से खा लिया । ऐसा लगा कि छाछ उसकी कमज़ोरी है । आज से हर दिन मैं अपने घर से छाछ लाकर उसे दूँगा ।

7. वार्तालाप (खाने की अदला बदली के बारे में)

मोरपाल - अरे मिहिर, जल्दी आओ हम साथ खाएँ ।

लेखक - पुस्तक बैक में रखकर मैं अभी आया ।

मोरपाल - वाह ! तुम्हारे टिफिन बॉक्स में यह क्या है ?

लेखक - यह तो राजमा है । क्या तुमने इसे अभी तक खाया नहीं ?

मोरपाल - नहीं यार । मैं इसे आज पहली बार देख रहा हूँ ।

लेखक - मेरेलिए सामान्य सी चीज़ तुम्हारेलिए इतना खास ! खाकर कहिए कैसा है राजमा-चावल ? तुमने आज क्या लाया ?

मोरपाल - मैं तो छाछ लाया हूँ ।

लेखक - वाह छाछ ! इसे खाए कितने दिन हुए ?

मोरपाल - तुम्हारे चावल और राजमा की कडी बहुत स्वादिष्ठ है ।

लेखक - तुम्हारे सब्जी-चावल और छाछ भी बहुत बढिया है ।

मोरपाल - सच ! तो हम एक काम करें, आज से हर दिन खाना अदला-बदली करके खाएँ ।

लेखक - ज़रूर । आज से मेरे घर से लाते राजमा-चावल तुम खाओगे और तुम्हारे घर से लाते छाछ-चावल मैं ।

मोरपाल - सचमुच यह तो बडी खुशी की बात है । खेलने जाना है न ? जल्दी खाएँ ।

लेखक - ठीक है ।

PART – 2

1. मोरपाल केलिए रविवार की छुट्टी का दिन हफ्ते का सबसे बुरा दिन क्यों होता ?

रविवार को घर पर कमरतोड मेहनत करना पडता है ।

2. लेखक बारिश के दिनों में घर पर नाचा करता था । क्यों ?

उसे स्कूल जाना नहीं पडेगा ।

3. मोरपाल शादी में भी स्कूली यूनीफॉर्म पहनकर क्यों आता था ?

क्योंकि मोरपाल के पास एकमात्र कमीज़ पैंट का नया जोडा वह नीली खाकी स्कूल यूनिफॉर्म ही थी ।

4. मोरपाल के लिए जीवन का सबसे अच्छा समय स्कूल में बिताए समय था । क्यों ?

स्कूल जाते समय ही मोरपाल घर के काम से बचकर एक बच्चा बना रह सकता था और अपने मित्रों के साथ खुशी से रह पाता । स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था । इसलिए वह अपनेगाँव से पंद्रह साइकिल चलाकर बिना नागा रोज़ स्कूल जाना चाहता था ।

5. मिहिर ने स्कूल में बिताए समय को अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा । क्यों?

क्योंकि मिहिर को स्कूल जाना पसंद नहीं था ।

6. मैं स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म से हमेशा चिढा करता । - इससे आपने क्या समझा ?

लेखक के पास अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे थे । इसलिए स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म से सदा चिढा करता था और उसे पहनना पसंद नहीं करता था ।

7. बचपन का दोस्त मोरपाल के बारे में मिहिर की यादें क्या–क्या हैं ?

मोरपाल मिहिर का अच्छा मित्र था । वह एक गरीब परिवार का था। वह रोज़ 15 किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । वह अपने घर से छाछ लाता था और वह मिहिर को देकर मिहिर का राजमा–चावल खाता था । मोरपाल रोज़ यूनीफॉर्म पहनना और स्कूल जाना पसंद करता था ।

8. ' रविवार की छुट्टी का दिन उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन हुआ करता ।'- ऐसा क्यों कहा गया है ?

स्कूल से गहरा प्रेम होने से मोरपाल ओर उसके जैसे सहपाठी बिना नागा रोज स्कूल आना चाहता था । स्कूल उनको जीवन में सफलता पाने की जोश पैदा करता था । रविवार को स्कूल न होने से वे निराश हैं और उसे हफ्ते का सबसे बुरा दिन मानते हैं ।

9. टिप्पणी – मोरपाल और मिहिर की दोस्ती

बचपन में मोरपाल और मिहिर अच्छे दोस्त थे । गाँव के स्कूल में दोनों एक साथ पढते थे । क्लास की दरीपट्टी पर नाम का पहला अक्षर मिलने से दोनों की बैठने की जगहें साथ थीं । खेल घंटी में दोनों खाना अदला-बदली करके खाते थे । मोरपाल अपने घर से छाछ लाकर मिहिर को देता था और मिहिर अपने घर से राजमा-चावल लाकर मोरपाल को देता था । दोनों आपस में बहुत प्यार करते थे । पढाई में वे एक दूसरे की सहायता भी करते थे । दोनों अपनी दोस्ती को बनाये रखने की कोशिश भी करता था । उनकी दोस्ती के बीच अमीरी-गरीबी की कोई भेदभाव नहीं था ।

10. मिहिर और मोरपाल के जीवन अनुभवों के आधार पर टिप्पणी

मिहिर संपन्न परिवार में जन्मा था। उनको रोज़ स्कूल जाना पसंद नहीं था । उनके पास बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे होने से उनकेलिए स्कूल यूनीफॉर्म एक बोझ थी । स्कूल में बिताए समय को वह अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा करता था । लेकिन उनका साथी मोरपाल दरिद्र परिवार का था । वह रोज़ पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । घर की कडी मेहनत और खेत मजूरी के बाद स्कूल का एकमात्र समय वह बच्चा बना रह सकता था । उसके पास एकमात्र कमीज़ -पैट का नया जोडा उसकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी । स्कूल में बिताए समय उसकेलिए बचपन का सबसे अच्छा समय था । रविवार की छुट्टी उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन था ।

11. टिप्पणी - मोरपाल की चरित्रगत विशेषताएँ

मिहिर की आई एम कलाम के बहाने फिल्मी लेख का पात्र है मोरपाल । वह गाँव के स्कूल में मिहिर का साथी था । वह लेखक के पास ही बैठता था । खेल घंटी में खाने की अदला-बदली करता था । लेखक के टिफिन बॉक्स में रखे राजमा को देखकर वह खुशी से खिल जाता था । अपनी गरीबी के कारण वह उसे पहली बार देखा था । घर की कमरतोड मेहनत और खेत-मजूरी से बचने केलिए वह रोज़ स्कूल आता था । स्कूल के 15 किलोमीटर दूर के किसी गाँव से साइकिल चलाकर आता था । स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था । वह लेखक केलिए छाछ लाकर देता था । उसके पास एकमात्र कमीज़-पैंट का नया जोडा वह नीली-खाकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी, इसलिए इसे पहनकर वह सब कहीं जाता था । वह आठवीं तक ही पढाई कर सकता है ।

12. मिहिर की डायरी (मोरपाल का स्कूल आठवीं के बाद छूट जाने के बारे में)

तारीख : ....

आज मेरेलिए दुखी दिन था । आज भी सारे दिनों के जैसे मोरपाल मेरेलिए छाछ लाया । बदले में मैंने उसको राजमा-चावल दिया । मोरपाल ने मुझसे कहा कि वह कल से स्कूल नहीं आएगा । मैं यह सुनकर स्तब्ध रह गया । वह गरीब है तो भी पढने में होशियार है । मुझे तो स्कूल जाना पसंद नहीं है । मोरपाल कल से अपने पिता के साथ खेत-मजूरी करने जाएगा । मैं मोरपाल की दोस्ती के कारण ही स्कूल जाता था । कल से मैं कैसे स्कूल जाऊँ ? किससे दोस्ती करूँ ? मैं बहुत उदास हूँ ।

PART – 3

1. छोटू उर्फ कलाम का सपना क्या था ?
   स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालों वाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना ।
2. फिल्म में कलाम क्या कर रहा है ?
   भाटीसा की चाय की दूकान में काम कर रहा है ।
3. रणविजय को स्कूल जाना कतई पसंद नहीं है । क्योंकि – ?
   परीक्षा का डर दिखाकर भयभीत करता है ।
4. कलाम और रणविजय के बीच दोस्ती कैसे होती है ?
   पहली मुलाकात के समय दोनों के बीच घुडसवारी सीखने और पेड पर चढना सिखाने के लेन देन को लेकर दोस्ती हो जाती है ।
5. कलाम और रणविजय के बीच का लेन-देन क्या था ?
   कलाम रणविजय को पेड पर चढना सिखाएगा और रणविजय कलाम को घुडसवारी सिखाएगा ।
6. लूसी मैडम कलाम को क्या वादा देती है ?
   वे उसे अपने साथ दिल्ली लेकर जाएँगी और राष्ट्रपति डॉ. कलाम जी से मिलवाएँगी ।
7. फिल्म का नायक अपना नाम कलाम रखा । क्योंकि ------- ?
   वह कलाम जैसा बनना चाहता है ।
8. छोटू लूसी मैडम का दिल कैसे जीत लेता है ?
   विदेशी टूरिस्ट की बोली झट-से सीख जाता है । इस प्रकार वह लूसी मैडम का दिल जीत लेता है ।
9. ‘ छोटू को अपनी मंज़िल मिलती है ।‘ उसकी मंज़िल क्या थी ?
   स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालों वाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना ।
10. छोटू की कलाकारी की प्रशंसा भाटी सा क्यों करता है ?
    क्योंकि छोटू हर काम अच्छी तरह से करता है । उसके हाथ से बनाई चाय में जादू है । वह जल्दी ही भाषाएँ सीख लेता है ।
11. ‘ बाकी निन्यानवे कहानियों को कभी भूलना नहीं चाहिए जो हमारे बचपनों में है ।‘- लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?
    समाज में बहुत कम लोग ही बचपन में देखते अपना सपना पूर्ण कर पाता है । बाकी अपने पारिवारिक परेशानियों के अनुसार जीने को मजबूर होते हैं । फिल्म में कलाम को अपनी मंजिल मिलती है लेकिन लेखक का मित्र मोरपाल अपना लक्ष्य पाने में सफल नहीं बनता । इसलिए लेखक ऐसा कहते हैं ।

12. कलाम की डायरी (टीवी में कलाम को देखने के बाद)

तारीख : ……………….

आज मेरे मन में एक विचार आया । वह मैं कभी साकार करूँगा । मुझे सब छोटू बुलाते हैं । आज से मेरा नाम कलाम है । टीवी में हमारे राष्ट्रपति डॉ.कलाम का भाषण मैंने देखा । कितना प्रभावकारी शब्द है उनका । भविष्य में मैं भी डॉ.कलाम जैसा बनूँगा । उनके नाम आज ही एक पत्र लिखूँगा । फिर उनसे मिलूँगा । इसकेलिए पढना ज़रूरी है । मैं कठिन परिश्रम करूँगा और सफल हो जाऊँगा ।

PART – 4

1. भाषण देने केलिए कहने पर रणविजय क्यों परेशान हो गया?
   क्योंकि उसकी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी । हाथ में चोट लगने से वह लिख नहीं सकता । ऐसे हो तो वह ट्रॉफी नहीं जीत पाएगा ।
2. राणा सा के कारिंदे कलाम पर चोरी का आरोप क्यों लगाते हैं ?
   वे कलाम के घर की तलाशी लेने आते समय वहाँ कुँवर रणविजय की चीज़ों को पाने से ।
3. राणा के कारिंदे ने छोटू पर चोरी का आरोप का आरोप लगाने पर भी छोटू ने उसका सहन किया । क्यों
   दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए और रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सज़ा मिलने से बचाने केलिए वह ऐसा करता है ।
4. ‘ लेकिन छोटू सिर्फ छोटू होकर नहीं जीना चाहता ।‘- इससे आपने क्या समझा ?
   चाय की दूकान में काम करनेवाला होने पर भी छोटू की आकांक्षाएँ बडी हैं । टीवी में देखे राष्ट्रपति कलाम जी का भाषण सुनकर, उनसे प्रभावित होकर वह अपना नाम कलाम रख देता है । स्कूल की अच्छी शिक्षा पाकर डॉ. कलाम जैसा बडा आदमी बनना उसका सपना है ।
5. ‘ लेकिन कलाम फिर कलाम है ’- लेखक के इस प्रस्ताव पर अपना विचार लिखें ।
   राणा सा के कारिंदे कलाम पर चोरी का आरोप लगाने पर भी मित्र रणविजय से की दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए वह उसको सह लेता है । रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सज़ा मिलने से बचाने केलिए वह ऐसा करता है । अभावों में रहने पर भी कलाम दोस्ती को ऊँचा स्थान देनेवाला होने से लेखक ऐसा कहते हैं ।

6. रपट तैयार करें (स्कूल के भाषण प्रतियोगिता में रणविजय को प्रथम स्थान मिला)

भाषण प्रतियोगिता ; रणविजय को प्रथम स्थान

स्थान : ----------------------- कल जैसलमेर के सरकारी हाईस्कूल में भाषण प्रतियोगिता चलाई गई । इसमें ढाणा के राणा का बेटा कुँवर रणविजय को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ । पुरस्कार प्राप्ति के बाद उसने कहा कि अपने दोस्त कलाम ने यह भाषण तैयार किया था । इसलिए पुरस्कार उसकेलिए है । कुँवर की हिन्दी अच्छी न होने से कलाम उसकी मदद की थी । यह पुरस्कार प्राप्ति रणविजय और कलाम के बीच की दोस्ती की अनूठी निशानी भी है । पुरस्कार वितरण स्कूल के प्रधानाध्यापिका ने किया। ढाणी में कुँवर के विजय पर खुशी मनाई गई ।

SREEDEVI R, KOVOOR VARKALA, SCRIPS ph- 9567224545

7. रणविजय को स्कूल में भाषण देने को कहने पर रणविजय और कलाम के बीच हुए संभावित वार्तालाप

कलाम - अरे कुँवर, तुझे चोट कैसे लगी ?
रणविजय - घबराइए मत, खेल-कूद में चोट तो लग जाती है। ऊपर आइए।
कलाम - हड्डी भी टूट गयी ?
रणविजय - हड्डी नहीं, ट्रॉफी जीतने का सपना टूट गया।
कलाम - समझा नहीं। लगता है तुमको कोई परेशानी है।
रणविजय - हाँ यार। कल स्कूल में एक भाषण देना है।
कलाम - उसमें परेशानी की बात है ?
रणविजय - भाषण हिंदी में है।
कलाम - तो क्या ?
रणविजय - मेरी हिंदी इतनी अच्छी नहीं, लिखूँगा कैसे ?
कलाम - फिकर मत करो। मेरी हिंदी तुमसे बढकर अच्छी है न ? मैं लिख दूँगा, तुम प्रस्तुत करो।
रणविजय - तो मैं उसे अच्छी तरह प्रस्तुत करूगा।
कलाम - आज ही लिख दूँगा। तुम ज़रूर ट्रॉफी जीतोगे।
रणविजय - ठीक है यार। जल्दी आओ।

8. छोटू उर्फ कलाम ने राष्ट्रपति डॉ.कलाम को देने लिखा पत्र

जैसलमेर
06 जून 2019

आदरणीय राष्ट्रपति साहब,

नमस्कार। आप कैसे हैं ? आशा है आप वहाँ कुशल से हैं। मैं आपसे अपनी मंज़िल बताना चाहता हूँ। मैंने अपनी चिट्ठी में थोडी लिखी है, पर बहुत समझना। चिट्ठी को तार समझकर जल्दी जवाब देना।

मैं ढाणी के एक थडी में काम करनेवाला एक बच्चा हूँ , जिसकी जिंदगी आपने बदल दी । मेरा नाम छोटू है ,लेकिन मैं अपने को कलाम मानता हूँ। मुझे छोटू अच्छा नहीं लगता। टीवी में आपका भाषण सुना। कितना अच्छा था। मैं समझता हूँ कि हर बच्चा लाल बहादुर शास्त्री बन सकता है और राष्ट्रपति कलाम भी बन सकता है। मैं आप जैसे बनना चाहता हूँ। लेकिन मैं बडा गरीब हूँ। मुझे स्कूल जाने की इच्छा है, मेरे मित्र रणविजय के साथ। लूसी मैडम ने आपसे मिलवाने का वादा किया था।

मुझे आपसे बहुत -सी बातें करनी हैं । मालूम है आपको बच्चे बहुत पसंद हैं । पढ-लिखकर मुझे आपके जैसा होना है । इसलिए कृपया आप मेरी मदद कीजिए। बस इतना ही कहना है और हाँ... धन्यवाद भी बोलना है।

सेवा में
डॉ. अब्दुल कलाम
राष्ट्रपति
दिल्ली

आपका आज्ञाकारी छात्र
कलाम (छोटू)

9. कलाम की डायरी (फिल्म के अंत में कलाम का सपना साकार हो जाता है)

तारीख: ....

आज अपनी पसंद के स्कूल में मेरा पहला दिन। मेरा सपना साकार हो गया। स्कूल बस में मित्र रणविजय के साथ स्कूल गया। स्कूल यूनीफॉर्म पर टाई बाँधकर हम दोनों साथ –साथ चले। क्लास में उसके साथ बैठकर पढा। स्कूल की बात माँ से कहने पर वे भी खुश हुई। याद आया , चाय की दूकान में काम करते समय लफ्टन से रूठता था। लूसी मैडम ने मुझे दिल्ली ले जाकर कलाम जी से मिलवाने का वादा दिया था। चोरी के आरोप पर गाँव छोडकर दिल्ली पहुँचा था। लेकिन कलाम जी से मिल न सका। पर मेरी चिट्ठी कलाम जी तक जरूर पहुँचेगी। सब सपने जैसे लग रहे हैं आज! भाटीसा आजकल बहुत खुश दिखते हैं। अपनी पढाई का खर्चा मैं खुद उठाऊँगा। अच्छी तरह पढ-लिखकर मैं कलाम जी जैसा बडा आदमी बनूँगा।

10. टिप्पणी - कलाम के की चरित्रगत विशेषताएँ

‘ नील माधव पांडा ’ की ‘ आई एम कलाम ’ फिल्म का नायक है छोटू उर्फ कलाम। चाय की दूकान में काम करनेवाले कलाम का सपना था - स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाला राष्ट्रपति कलाम सा बनना। एक अलग जीवन, बेहतर जीवन का सपना दिखाने से कलाम को स्कूल जाना बहुत पसंद था। वह सबकुछ जल्दी से सीखनेवाला था तथा जीवन की कठिनाइयों को हराकर बडे आदमी बनने की आशा रखनेवाला एक ईमानदार लडका भी। घुडसवारी सीखने और पेड पर चढना सिखाने के लेन देन को लेकर रणविजय के साथ उसकी दोस्ती हो जाती है । अंग्रेज़ी सीखने में रणविजय उसकी मदद करता है तो कलाम रणविजय को हिंदी । स्कूल के हिंदी भाषण प्रतियोगिता केलिए भाषण तैयार करने में कलाम रणविजय की सहायता भी करता है। दोस्ती को ऊँचा स्थान देने से अपने ऊपर चोरी का आरोप लगाने पर अपने मित्र को बचाने केलिए वह उस आरोप को सह लेता है। राष्ट्रपति कलाम जी से मिलने वह गाँव छोडकर दिल्ली तो पहुँचता है पर उनसे मिल न सकता । अंत में अपने दोस्त के साथ स्कूल जाकर पढने में वह सफल बनता है।

CREDIT: R. KOVOOR VARKALA SCRIPTS ph- 9567224545

5. सबसे बडा शो मैन PART -1

1. चार्ली की माँ स्टेज से हटने को क्यों मजबूर हो गई ?

गाते समय उसकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से लोग चिल्लाने लगे तो वे स्टेज से हटने को मजबूर हो गई ।

2. लोग क्यों चिल्लाने लगे ?

गाते समय चार्ली की माँ की आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से ।

3. माँ और मैनेजर के बीच बहस क्यों हुआ ?

मैनेजर चार्ली को स्टेज पर ले जाने की ज़िद को लेकर

4. मैनेजर चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद क्यों करने लगा ?

मैनेजर ने चार्ली को पहले कभी माँ के कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते हुए देखा था । इसलिए मैनेजर लोगों को शांत कराने केलिए चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा ।

5. मैनेजर किसकी ज़िद करने लगा ?

चार्ली को स्टेज पर भेजने की

6. चार्ली को स्टेज पर भेजने से माँ क्यों डर गई ?

पाँच साल का उसका बेटा शोर मचाती इस उग्र भीड को कैसे झेल पाएगा ।

7. चार्ली को स्टेज पर क्यों जाना पडा ?

गाते समय उसकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से लोग चिल्लाने लगे तो वे स्टेज से हटने को मजबूर हो गई । तब मैनेजर लोगों को शांत कराने केलिए चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा तो उसको स्टेज पर जाना पडा ।

8. इस अभद्र शोर ने माँ को स्टेज से हटने को मजबूर कर दिया । उस समय माँ की हालत कैसी होगी ?

जब तारीफ करनेवाले माँ की हालत समझे बिना शोर मचा रहे थे तब माँ ने बहुत तनाव का अनुभव किया होगा । किसी भी कलाकार यह सह पाना मुश्किल की बात है । उसे यह भय भी हुआ होगा कि अब किस प्रकार अपने बच्चे का पालन –पोषण करेगी ।

9. ' पाँच साल का चार्ली स्टेज पर अकेला था '– उस समय चार्ली ने क्या सोचा होगा ?

चार्ली ने सोचा होगा कि अपनी माँ की जगह लेते हुए मुझे हिम्मत से काम लेना होगा, माँ की तरह अच्छी तरह गाना होगा । यदि ऐसा नहीं हुआ तो लोग और शोर मचाएँगे, लेकिन माँ केलिए मुझे गाना होगा ।

10. माँ और मैनेजर के बीच का वार्तालाप

मैनेजर - हेन्नाजी, देखिए न, दर्शक शोर मचा रहे हैं । उनको किसी न किसी तरह शांत कराना होगा ।

माँ - मैं क्या करूँ, गा नहीं पा रही हूँ । मेरी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल गयी है ।

मैनेजर - लेकिन इसी तरह छोड दें तो वे सब कुछ तोड देंगे । आपका बेटा है न चार्ली, वह छोटा है लेकिन किसी तरह इन दर्शकों को शांत कराए तो ...

माँ - नहीं जी । पाँच साल का छोटा बच्चा इस उग्र भीड को कैसे झेल पाएगा । मैं नहीं मानूँगी ।

मैनेजर - हमारे सामने और कोई चारा नहीं न ? इसलिए बता रहा था । क्योंकि मैंने आपके बेटे को आपके मित्रों के सामने अभिनय करते हुए और गीत गाते हुए देखा था । मुझे लगता है कि इस हालत में उसकी सहायता लेना ठीक होगा ।

माँ - लेकिन मैं कैसे बताऊँ, इस छोटे बच्चे को स्टेज पर भेजने के लिए । मुझे डर लगता है ।

मैनेजर - हम सब तो हैं न । उसे अकेले छोडकर हम नहीं जा रहे हैं । हम उसको स्टेज पर छोडेंगे ।

माँ - मैं क्या बताऊँ सर । और कोई उपाय नहीं तो आपकी मर्ज़ी ।

11. वार्तालाप (माँ चार्ली से स्टेज पर जाने का अनुरोध करती है ।)

माँ – चार्ली बेटा ... ।

चार्ली – क्या है माँ ?

माँ – बेटा ... यह देखो ... लोग चिल्ला रहे हैं ।

चार्ली – इसलिए क्या ?

माँ – तुम स्टेज पर आकर कुछ करों ... ।

चार्ली – मैं क्या करूँ ?

माँ – तुमने पिछले दिन मेरी सहेलियों के सामने गाना गाया है न ? वही यहाँ करों ... ।

चार्ली – वह आपकी सहेलियों के सामने है न ... ? वे मेरे परिचित हैं । लेकिन अपरिचित लोगों के सामने मैं कैसे गाऊँ ... ?

माँ – कुछ नहीं होगा बेटा ... जल्दी मेरे साथ आओ और मैं कहने के जैसे करो ।

चार्ली – ठीक है माँ ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRIPTS Ph- 9567224545

PART -2

1. चार्ली ने बीच में गाना क्यों रोक दिया ?

चार्ली का गाना आधा ही हुआ तो स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई । उन पैसों को बटोरने केलिए उसने बीच में गाना रोक दिया ।

2. लोगों ने माँ से क्यों हाथ मिलाया ?

चार्ली की मासूमियत से प्रभावित होकर

3. दर्शकों ने चार्ली का अभिनंदन कैसे किया ?

दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ बजाईं । कई लोगों ने माँ से हाथ मिलाकर चार्ली की तारीफ की ।

4. दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ क्यों बजाईं ?

चार्ली ने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश किया । उसकी प्रस्तुति और मासूमियत से प्रभावित होकर दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ बजाईं ।

5. अंत में दर्शकों ने तालियाँ बजाकर माँ का स्वागत क्यों किया ?

पाँच वर्षीय बालक चार्ली ने अपनी मासूमियत से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर चिल्लाते दर्शकों को अपने वश में लाया । उसने जनता में गुदगुदी फैला दी । इसलिए दर्शकों ने तालियाँ बजाकर माँ का स्वागत किया ।

6. ' चार्ली स्टेज पर पहली बार आया और माँ आखिरी बार ... ।' माँ का शो आखिरी हो जाने का कारण क्या था ?

चार्ली की माँ अपनी आवाज़ फटने के कारण स्टेज पर गा नहीं सकती थी । विवशता से उसे स्टेज छोडना पडा । गले का दर्द बढ रही थी । उनके बदले स्टेज पर उतरे चार्ली को लोगों ने एक अच्छे कलाकार के रूप में मान लिया था । इसलिए उन्होंने ऐसा निर्णय लिया होगा ।

7. ' इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया ।'– क्यों ?

चार्ली गीत गाते समय स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई । गाना रोककर उसने अपने बाल सहज भोलापन से घोषणा की कि अब पैसे बटोरकर ही मैं आगे गाऊँगा । इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया ।

8. ' उसने जन्म ले लिया था ।'– इससे क्या मतलब है ?

स्टेज में पहली बार उतरे पाँच साल के चार्ली ने अपने भोलापन से दर्शकों के मन को आनंदित कर दिया । इस उम्र में उसने ऐसा कर दिया तो बाद में बडे होकर वह क्या–क्या नहीं कर सकता । इसलिए ऐसा कहा गया है ।

9. समाचार (चार्ली का पहला शो)

माँ की आवाज़ फटी ; बेटा बना शो मैन

स्थान : .... लंदन के प्रसिद्ध थिएडर में पहली बार कदम रखा पाँच साल का बच्चा चार्ली ने स्टेज पर चमत्कार कर दिया । गाते वक्त अपनी माँ की आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया । चार्ली निष्कलंकता से गा रहा था कि लोग प्रसन्न होकर स्टेज पर पैसा फेंकने लगे । बच्चा गाना बंद करके पैसे बटोरने लगा । इस व्यवहार ने हॉल को हँसीघर में बदल दिया । इसके बाद उसने दर्शकों से बातचीत की, नृत्य किया और अपनी माँ सहित कई गायकों की नकल उतारी । दर्शकों ने खुशी से तालियाँ बजाकर चार्ली का अभिनंदन किया । लोगों ने उसमें एक महान कलाकार को देख लिया था ।

10. वार्तालाप - चार्ली और माँ (चार्ली के पहली शो के बाद)

माँ – आज तूने कमाल कर दिया बेटे !

चार्ली – लेकिन मैं खुशी नहीं हूँ अम्मा ।

माँ – क्या हुआ बेटा ?

चार्ली – आप पर लोगों ने ...

माँ – छोड दो बेटा, गाना बीच में रुक गया न ?

चार्ली – आपकी आवाज़ को क्या हुआ माँ ?

माँ – पता नहीं। लगता है अब गा नहीं सकती ...

चार्ली – ऐसा न कहो माँ ।

माँ – दर्शकों ने तुझे मान लिया है, इस पर मैं खुश हूँ ।

चार्ली – भूल जाओ माँ, सब ठीक हो जाएँगे ।

11. माँ की डायरी

तारीख : ....

आज का दिन मैं कैसे भूलूँ ? ... दुख और खुशी भरा दिन । मेरा लाडला चार्ली आज शो मैन बन गया । उसका पहला शो हमेशा यादों में रहेगा । लगता है मैं आगे गा नहीं पाऊँगी । गले में खराबी है । गाते वक्त मेरी आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया । मैं बहुत डर गयी थी । लेकिन बेटा चार्ली ने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराने लगा । खूब पैसा भी मिला । शैतान, मेरी फटी आवाज़ का भी नकल उतार दी । हे भगवान ! आगे भी मेरा लाडला शो में कमाल करे ।

6. अकाल और उसके बाद PART -1 (कई दिनों तक ------------- हालत रही शिकस्त)

1. कवितांश में किस हालत का चित्रण है ?

अकाल की भीषणता का

2. चूल्हा क्यों रोया ?

अकाल के कारण घर में दाना नहीं था । इसलिए खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता । इस कारण अपनी निर्जीव हालत पर वह रोया ।

3.' चक्की रही उदास '– से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

अकाल के कारण घर में दाना नहीं होने से पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता । इसलिए अपनी निर्जीव हालत कारण चक्की दुखी रही ।

4. कानी कुतिया कहाँ सोई हुई थी ? क्यों ?

कानी कुतिया उदास होकर चूल्हा और चक्की के पास सोई हुई थी । क्योंकि उसे कहीं से खाने को कुछ मिलने की संभावना नहीं थी ।

5. छिपकलियाँ भीत पर गश्त क्यों लगा रही थीं ?

अकाल के कारण घर की हालत इतनी बुरी थी कि किसीकेलिए खाना नहीं था । इसलिए कीडों को न मिलने से यानी भूख से परेशान होकर छिपकलियाँ दीवार पर इधर–उधर चलती थीं ।

6. अकाल में चूहों की क्या हालत हो गई ?

भोजन न मिलने से अकाल में चूहों की हालत भी बहुत शोचनीय बन गयी ।

7.' चूल्हे का रोना ' और ' चक्की का उदास होना '– इसका मतलब क्या है ?

अकाल के कारण घर में दाना नहीं था । इसलिए खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता । इस कारण दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही ।

8. कवितांश का आशय

हिंदी के मशहूर कवि नागार्जुन ने अकाल और उसके बाद कविता के प्रस्तुत अंश में अनेक बिंबों और प्रतीकों से सजाकर अकाल की भीषणता का वर्णन किया है । कविता में अकाल से ग्रस्त एक घर का बारीक चित्रण है ।

अकाल के प्रभाव से घर में कुछ भी अनाज नहीं था । इस कारण कई दिनों तक खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता । इसलिए दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही । कानी कुतिया पिछले कुछ दिनों से खाना न मिलने की निराशा से चूल्हा और चक्की के पास सोई थी । भूख मिटाने केलिए कुछ मिलने की तलाश में छिपकलियाँ दीवार पर इधर-उधर घूम रही थीं । भोजन न मिलने से चूहों की हालत भी बहुत शोचनीय थी । क्योंकि घर में खाना बनने पर ही उन्हें भी खाने केलिए कुछ मिलता है । अकाल का असर केवल मनुष्यों को ही नहीं अन्य जीव-जंतुओं पर भी पडता है ।

कवि नागार्जुन ने एक भी मानव पात्र को प्रस्तुत न करके अन्य जीव-जंतुओं और निर्जीव पदार्थों के ज़रिए घर की बुरी हालत का चित्रण अच्छी तरह किया है । कविता में अकाल ग्रस्त घर के माहौल को प्रस्तुत करने में कवि सफल हुए हैं । सरल भाषा में लिखी यह कविता बिलकुल अच्छी और प्रासंगिक है ।

PART -2 (दाने आए ------------- कई दिनों के बाद)

1. कवितांश में किस हालत का चित्रण है ?

अकाल के बाद की खुशहाली

2.' चमक उठीं घर भर की आँखें '– इसका मतलब क्या है ?

अकाल के दिन बीत जाने पर कई दिनों के बाद घर में अनाज आने से खाना पकाया गया । इसलिए घर के अंदर के चूल्हा, चक्की जैसे निर्जीव वस्तुओं और सभी जीव जंतुओं की आँखें नए जीवन आने की खुशी में चमक उठीं ।

3.' धुआँ उठा आँगन से ऊपर '– इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं ?

अकाल दूर होने से कई दिनों के बाद घर में दाने आए। इससे चूल्हा जलाने लगा, आँगन से ऊपर धुआँ उठने लगा । घर में रहनेवाले सभी जीवों की आँखें खुशी से चमकने लगीं । क्योंकि आज उनको खाना मिलनेवाला है ।

4. कौआ अपनी पाँखें खुजलाने का कारण क्या है ?

अकाल के बाद घर में खाना पकाया गया । इसलिए घर से खाने की बाकी चीज़ें बाहर फेंकने पर उसे चुगकर तेज़ी से उड जाने की तैयारी में कौआ अपनी पाँखें खुजलाया होगा ।

5. कवितांश का आशय

अकाल और उसके बाद कविता के प्रस्तुत अंश में कवि नागार्जुन ने अनेक बिंबों और प्रतीकों से सजाकर अकाल के बाद की खुशहाली का वर्णन किया है ।

अकाल के दिन बीत जाने से घर की हालत एकदम बदल गयी । घर में कई दिनों के बाद दाने अए । घरवालों ने चूल्हा जलाया और आँगन से ऊपर धुआँ उठने लगा । घर के अंदर के चूल्हा,चक्की जैसे निर्जीव वस्तुओं और सभी जीव जंतुओं की आँखें नए जीवन आने की खुशी में चमक उठीं । घर से खाने की बाकी चीज़ें बाहर फेंकने पर उसे चुगकर तेज़ी से उड जाने की तैयारी में कौए ने अपनी पाँखें खुजलाईं । अकाल के दिन खतम होने पर घर के अंदर दाना आने से मनुष्यों के साथ सभी जीव-जंतु संतुष्ट हो जाते हैं ।

यहाँ कई दिनों के बाद फिर सबके मन में आई खुशी का,घर की बदली हालत का वर्णन सरल शब्दों में किया है । अकाल के बाद की खुशहाली की ओर सबका ध्यान आकर्षित करनेवाली यह कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है ।

SREEJITH P KOVOOR VARKALA SCRIPTS ph- 9567224545

7. ठाकुर का कुआँ PART -1

1.‘ गंगी ने जोखू को गंदा पानी पीने को न दिया ।’– क्यों ?

क्योंकि वह जानती थी खराब पानी से पति की बीमारी बढ जाएगी ।

2. गंगी नहीं जानती थी कि पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती है । - यहाँ किस सामाजिक वास्तविकता प्रकट होती है ?

यहाँ गंगी की अशिक्षित हालत का संकेत है । निम्नजाति के लोग शिक्षा से वंचित रह जाते हैं । इसलिए उनमें अनजानी, अंधविश्वास आदि भी देखे जाते हैं । जाति के नाम पर किसीसे शिक्षा मिलने का अपना अधिकार छीनना उचित नहीं है ।

3.‘ मगर दूसरा पानी आवे कहाँ से ? ’- यहाँ जोखू की किस की ओर संकेत है ?

जोखू निम्नजाति में जन्मा था । उस समय जातिप्रथा ज़ोरों में था । निम्नजाति के लोगों को उच्च जाति के लोगों के कुएँ से पानी लेने का अधिकार नहीं था । पीने का पानी तक उन्हें निषेध था ।

4.‘ पानी कहाँ से लाएगी ? ’- जोखू के इस कथन पर अपना विचार लिखें ।

गंगी पानी लाते कुएँ में कोई जानवर गिरकर मरा है । निम्नजाति के होने से उन्हें ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी लाने की अनुमति नहीं थी । यदि ऐसा किया तो उच्चजाति के लोग उसे जान से मार डालेगा । कोई तीसरा कुआँ गाँव में नहीं था । इसलिए शुद्ध पानी लाने की कठिनाई की ओर यहाँ संकेत है ।

5.‘ क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे ’- गंगी के इस कथन पर अपना विचार लिखें ।

अछूत होने के कारण गंगी को कुएँ से साफ पानी भरने का भी हक नहीं है । सभी अधिकार समाज में उच्च माननेवालों के पास है । गंगी को समझ में नहीं आती कि लोग कैसे श्रेष्ठ बनते हैं । यहाँ समाज की असमानता के विरुद्ध गंगी का आक्रोश ही प्रकट होता है ।

6. हाथ-पाँव तुडवा आएगी और कुछ न होगा । - जोखू के इस कथन पर आपका विचार क्या है ?

यह वाक्य गंगी से जोखू का कथन है । इस कथन के ज़रिए जोखू एक सामाजिक सत्य को हमारे सामने प्रस्तुत करता है । इसमें छुआछूत के भावना के विरुद्ध जोखू का आक्रोश हम सुन सकते हैं । निम्न जाति के लोगों को उच्च माननेवालों के कुएँ से पानी भरने की अनुमति नहीं थी । ये लोग उच्च वर्ग के लोगों की क्रूरता सहकर जीने को विवश थे ।

7. जोखू लोटे का पानी क्यों पी नहीं सका ?

लोटे के पानी से सख्त बदबू आ रही थी । ऐसे बदबूदार पानी पीने से बीमारी बढ जाने की संभवना होने से पत्नी गंगी ने उसे वह पानी पीने न दिया था ।

8.‘ ठाकुर के कुएँ पर कौन चढने देगा ? ’ गंगी क्यों इस प्रकार सोचती है ?

गंगी चमार जाति की है । वर्ण व्यवस्था के अनुसार वह अछूत थी । उनकी छाया तक ऊँच जाति अपवित्र मानी जाती थी । इसलिए गंगी ठाकुर के कुएँ के पास नहीं जा सकती ।

9. पटकथा (पानी लेने जाने से पहले)

स्थान – एक झोंपडी का भीतरी भाग।

समय – दोपहर के दो बजे ।

पात्र – गंगी और जोखू । (गंगी 40 औरत, धोती और चोली पहनी है । जोखू 50 का आदमी, धोती और बनियन पहना है ।)

दृश्य का विवरण – प्यास से परेशान होकर जोखू कमरे की पलंग पर बैठा है । उसको गंगी पीने केलिए लोटे में पानी देती है ।

संवाद –

जोखू – बहुत प्यास लग रही है । थोडा पानी लाओ ।

गंगी – अभी लाती हूँ ।

जोखू – यह कैसा पानी है ? तू यह पानी कहाँ से लायी ?

गंगी – गाँव के कुएँ से । कल ही लायी हूँ । क्या हुआ ?

जोखू – मारे प्यास के पिया नहीं जाता । गला सूखा जा रहा है और तू सडा पानी पिलाए देती है !

गंगी – (लोटा नाक से लगाते हुए) हाँ बदबू है । मगर कैसे ? कल लाते समय बदबू नहीं थी । कोई जानवर कुएँ में गिरकर मरा होगा ।

जोखू – प्यास सह नहीं पाता । ला, थोडा पानी, नाक बंद करके पी लूँ ।

गंगी – मैं नहीं दूँगी, खराब पानी से आपकी बीमारी बढ जाएगी । मैं कहीं से दूसरा पानी लाकर देती हूँ । आप लेट जाइए ।

जोखू – दूसरा पानी ! कहाँ से लाएगी ?

गंगी – ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं, क्या एक लोटा पानी न भरने न देंगे ?

जोखू – हाथ–पाँव तुडवा आएगी । बैठ चुपके से ।

गंगी – आप चिंता मत कीजिए । मुझे पता है क्या करना है ।

जोखू – ठीक है । तुम्हारी मर्ज़ी । जल्दी वापस आना ।

(मन में साहस भरकर गंगी रस्सी और घडा लेकर ठाकुर के कुएँ की ओर निकल जाती है ।)

10. समाचार तैयार करें ।

कुएँ में मरा जानवर ; पीने के पानी केलिए तरसते लोग

स्थान : .... यहाँ के निम्न वर्ग के लोग के कुएँ में पिछले दिन एक मरे जानवर को दिखाई दिया । पानी गंदा होने से उससे बदबू आ रही है । निम्न वर्ग के लोगों के पानी लेने का एकमात्र आश्रय यह कुआँ था । पेयजल के अभाव से यहाँ लोग बहुत मुसीबत में हैं । पिछले दिनों से इस कुएँ के पानी का उपयोग करते लोग आशंका में है । ऊँचे वर्ग के लोगों के कुएँ तक जाने की अनुमति न होने के कारण गरीब लोग चिंतित है ।

PART -2

1.‘ हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं ‘– यहाँ किस सामाजिक समस्या की ओर संकेत है ?

जातिप्रथा

2.‘ सिर्फ ये बदनज़ीब नहीं भर सकते ।‘– क्यों ?

वे नीची जाति के हैं ।

3. ऊँच–नीच के भेदभाव पर अपना विचार क्या है ? लिखें ।

हमें ऊँच–नीच के भेदभावों को छोडना चाहिए । जाति प्रथा के कारण गरीब लोगों को कई प्रकार की सामाजिक कुरीतियों का शिकार बनना पडता है । किसीको जन्म के आधार पर नीच मानना निंदनीय अपराध है ।

4.‘ हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं ? ’- गंगी के इस विचार पर आपका मत क्या है ?

समाज में व्याप्त जाति भेद पर गंगी का आक्रोश यहाँ प्रकट है । उच्च वर्ग के ठाकुर, साहू आदि बडे अन्याय करते हैं । लेकिन उनका सब कहीं आदर होता है । अछूत असहाय होकर अत्याचार के शिकार हो रहे हैं । यह हालत तो बदल जाना ही होगा । जन्म के आधार पर किसीको नीच मानना निंदनीय अपराध है । ऊँच-नीच की भावनाओं को तोडकर एक मन से करने से ही सामाजिक उन्नति संभव है । जाति भेद मानवता व ईश्वर के प्रति अपराध है ।

5. रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर गंगी का दिल विद्रोह करता है । क्या आप इसका समर्थन करते हैं ? क्यों ?

पानी प्रकृति का अनमोल वरदान है । इसपर सबका समान अधिकार है । पानी भरने से कुछ लोगों को मना करना बिलकुल अन्याय है । इसके विरुद्ध विद्रोह करना ही उचित है ।

6. गंगी के विद्रोही दिल में सामाजिक अन्याय के विरुद्ध क्या-क्या विचार आते हैं ?

हम क्यों नीच हैं ? उच्च वर्ग के ठाकुर, साहू आदि बडे अन्याय करते हैं । लेकिन उनका सब कहीं आदर होता है । हम जैसे अछूत असहाय होकर उनके अत्याचार के शिकार हो रहे हैं । यह हालत तो बदल जाना ही होगा ।

7. गंगी का विद्रोही दिल रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगा । - यहाँ प्रस्तुत रिवाज़ी पाबंदी और मज़बूरी क्या है ?

जाति के नाम पर समाज में बडा भेदभाव था । निम्न कहे जानेवाले लोगों से छुआ पानी पीना, भोजन खाना, कुएँ से पानी भरना, रास्ते में उनसे मिलना आदि बातों को पाबंदी थी । निम्न वर्ग के लोग ये सब सहकर जीने को विवश थे । उच्च वर्ग के लोगों के हितानुसार अपनी ज़िंदगी की प्राथमिकताओं की तय करने केलिए भी वे विवश थे ।

8. मैदानी बहादुरी का तो अब न ज़माना रहा है, न मौका ।– इसका क्या मतलब है ?

पुराने ज़माने में उच्च वर्ग के लोग अपनी शक्ति के सहारे गरीबों का शोषण करते थे । आज के बदलते ज़माने में कानून को मान्यता मिली है । लेकिन संपन्न वर्ग के लोग रिश्वत और शिफारिश के सहारे कानून को भी वश में कर लिए हैं ।

9. टिप्पणी – जाति भेद एक अभिशाप है

हमारे समाज में जाति भेद एक बडी समस्या है । आदमी जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है । जाति के नाम पर मनुष्य को अलग-अलग विभागों में बाँटना अभिशाप है । उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोग से कठिन मेहनत करवाते हैं । लेकिन उसे उचित वेतन नहीं देता है । सार्वजनिक कुएँ से पानी भरना, इष्ट भोजन खाना, आवश्यक वस्त्र पहनना, मंदिर में प्रवेश करना आदि को उन्हें नहीं मिलता है । उनके बच्चों को स्कूल में जाकर पढने का अवकाश तक नहीं है । निम्न कहे जानेवाले लोगों से छुआ पानी पीना, भोजन खाना, कुएँ से पानी भरना, रास्ते में उनसे मिलना आदि बातों में पाबंदी थी । निम्न वर्ग के लोग ये सब सहकर जीने को विवश थे । उच्च वर्ग के लोगों के हितानुसार अपनी ज़िंदगी की प्राथमिकताओं को तय करने केलिए भी वे विवश थे । इन भेदभावों से मुक्ति आवश्यक है । जाति प्रथा को इस समाज से नहीं इस देश से दूर करना चाहिए । इससे ही समाज की तथा देश की भलाई होती है ।

10. पोस्टर (points) संदेश – जातिप्रथा एक अभिशाप है

जातिप्रथा एक अभिशाप है

1. मानव–मानव के बीच जाति भेद न करें... जातीय असमानता सामाजिक अपराध, इसे खतम करें।	2. छुआछूत दूर करो... समाज की उन्नति पाओ।
3. नीच कुल में जन्म लेना व्यक्ति का अपना दोष नहीं... जन्म के आधार पर नीच जाति मानना निंदनीय अपराध।	4. सभी मानव समान... जाति न देखो, कर्म देखो।
5. एक देश, एक जाति, एक धर्म जाति ने नाम पर अत्याचार न करें।	6. मनुष्य को जाति के नाम पर नहीं मनुष्य की तरह जानो... याद दें... आपत्ति, संकट पर कोई जाति नहीं होती।
7. धरती पर सभी का हक एक जैसा जाति के नाम पर किसीसे यह अधिकार मत छीनो।	8. करो रोकथाम जातिप्रता का ... अपनेलिए... मनुष्यता केलिए...
9. जातीय असमानता संविधान के खिलाफ... इसे मिटाओ...सभी मानवों को समान मानो।	**विश्व जातिगत भेदभाव विरुद्ध दिवस– मार्च 21**

PART -3

1. औरतें कुएँ के पास क्यों आई थीं ?

कुएँ से घरवालों केलिए घडे में ताज़ा पानी भरकर लाने केलिए

2. गंगी वृक्ष के अंधेरे साये में जा खडी हुई । क्यों ?

कुएँ के पास किसीके आने की आहट होने से

3. गंगी ने क्षणिक सुख की साँस ली । क्यों ?

कुएँ के पास कोई नहीं था ।

4. गंगी दबे पाँव कुएँ की जगत पर चढी, विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले न हुआ था । – गंगी को ऐसा अनुभव क्यों हुआ होगा ?

अछूत होने के कारण गंगी ठाकुर के कुएँ के पास नहीं जा सकती । रात की निर्जन हालत में सही, गंगी जीवन में पहली बार ठाकुर के कुएँ की जगत पर चढी, इससे उसको गर्व का अनुभव हुआ होगा ।

5. वार्तालाप – कुएँ से पानी भरने आई औरतों के बीच हुए

पहली औरत – (जलन के साथ) देखो दीदी, ये मर्द लोग कितने बुरे हैं ।

दूसरी औरत – ठीक कहा तुमने । खाना खाने बैठते ही हुकम चलाया कि कुएँ से ताज़ा पानी भर लाओ । घडे केलिए पैसे नहीं है ।

पहली औरत – (गुस्से में) हमें आराम से बैठे देखकर मरदों को जलन होती है ।

दूसरी औरत - हाँ, ये लोग एक कलसिया भर पानी भरकर नहीं आते । बस हुकम चला दिया कि ताज़ा पानी भर लाओ,जैसे हम लौडियाँ ही तो हैं ।

पहली औरत – लौडियाँ नहीं तो और क्या हो तुम ? रोटी–कपडा नहीं मिलती क्या ? दस–पाँच रुपए भी छीन–झपटकर लेती हो न? और क्या चाहिए तुम्हें ?

दूसरी औरत – मत लजाओ दीदी ! छिन्न भर आराम करने को मन बहुत तरसता है । इतना काम और कहीं करें तो इससे आराम मिलती । यहाँ काम करते हुए मर जाने पर भी किसीके चेहरे पर खुशी नहीं दिखता ।

पहली औरत – तुम सच कहती हो दीदी, ये लोग हमें नौकर समझकर रखे हैं ।

दूसरी औरत – ज़रूर । अब हम लौट चलें । वे हमें बुला रहे होंगे ।

पहली औरत – ठीक है । जल्दी चलिए ।

PART -4

1. गंगी रस्सी छोडकर क्यों भाग गई ?

ठाकुर के द्वारा पकडे जाने डर से

2. गंगी क्यों रात को ठाकुर के कुएँ पर जाती है ?

पति केलिए साफ पानी लेने केलिए

3. गंगी के हाथ से रस्सी क्यों छूट गई ?

गंगी को मालूम हुआ कि दरवाज़ा खोलकर ठाकुर आनेवाला है । इस कारण से वह डर गयी और रस्सी हाथ से छूट गई ।

4. जोखू ने गंदा पानी पीने का निश्चय क्यों किया ?

जोखू को मालूम था कि ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी लेना आसानी की बात नहीं है । उसकी राय में ठाकुर लाठी मारेंगे और साहूजी एक के पाँच लेंगे । इस कारण से ही उसने गंदा पानी पीने का निश्चय किया ।

5. शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा । यहाँ ठाकुर के दरवाज़े की तुलना शेर की मुँह से क्यों की गई है ?

शेर एक खूँखार जानवर है । उसके सामने से बच जाना मुश्किल है, पर असंभव नहीं । पर ठाकुर जैसे उच्च वर्ग के लोग शेर से भी अधिक क्रूर है । एक अछूत को कुएँ से पानी भरते देखें तो उसे जरूर मार ही डालेगा । गंगी यह बात अच्छी तरह से जानती थी । इसलिए जब ठाकुर का दरवाज़ा एकाएक खुलता है तो अत्यंत डर जाने से वह ऐसा सोचती है ।

6. गंगी और जोखू के बीच हुए वार्तालाप (ठाकुर के कुएँ से वापस घर आने पर)

गंगी – अरे ! आप यह क्या कर रहे हैं ?

जोखू – फिर मैं क्या करूँ ? प्यास के मारे गला सूख गया है ।

गंगी – लेकिन वह बदबूदार पानी है न ? आप की बीमारी बढ जाएगी तो?

जोखू – और मैं क्या करूँ ? तू साफ पानी लाने गई थी न ? मिल गया ?

गंगी – नहीं ।

जोखू – फिर इतनी देर तक कहाँ थी ?

गंगी – मैं ठाकुर के कुएँ से पानी ले रही थी ।

जोखू – फिर क्या हुआ ?

गंगी – इसी बीच ठाकुर ने मुझे देखा और मैं जान बचाकर भाग गयी ।

जोखू – मैंने पहले ही कहा था न ?

गंगी – अब क्या होगा ? भगवान ही जाने !

जोखू – ठीक है । अब लेटकर सो जाओ ।

7. गंगी की डायरी (ठाकुर के कुएँ से वापस घर आने पर)

तारीख : ....

आज का यह बुरा दिन मैं कैसे भूलूँ ? प्यास के मारे मेरे बीमार पति को शुद्ध पानी दे न पाई । आज उनके पूछने पर मैंने जो पानी दिया उससे बदबू आ रही थी । इसलिए मैंने उन्हें वह पानी पीने नहीं दिया । उनकेलिए साफ पानी लाने केलिए मैं रात के अंधेरे में रस्सी और घडा लेकर ठाकुर के कुएँ की ओर निकल पडी । मैं घडे में रस्सी डालकर पानी खींच रही थी, अचानक ठाकुर दरवाज़ा खोलकर बाहर आए । मैं जल्दी घडा, रस्सी सब छोडकर वहाँ से भाग गयी । यदि पकड लिया तो ... । घर पहुँचकर मैंने देखा, मेरे पति वही गंदा पानी पी रहे हैं । अब मैं उन्हें कैसे मना करूँ ? हे भगवान ! हमारी यह बुरी हालत कब बदलेगी ?

8. टिप्पणी - गंगी की चरित्रगत विशेषताएँ

गंगी मुंशी प्रेमचंद की मशहूर कहानी ' ठाकुर का कुआँ ' की नायिका है । वह निम्नजाति की मानी जाती है । उसके पति जोखू बीमार है । पीने केलिए पति को साफ पानी दे न पाने से वह परेशान होती है । ठाकुर के कुएँ से पानी लेने जाने पर जोखू उसे डाँटता है । लेकिन वह पीछे मुडनेवाली नहीं थी । रात को चुपके –चुपके वह ठाकुर के कुएँ से पानी लाने जाती है । अत्यधिक सावधानी से पानी लेते समय ठाकुर का दरवाज़ा खुलता है और गंगी वहाँ से बच जाती है । उसका विद्रोही दिल रिवाज़ी पाबंदियों पर चोटें करता है । वह अपने पति से बहुत प्यार करती है । वह जानती थी कि गंदा पानी पीने से बीमारी बढ जाएगी । लेकिन बेचारी अनपढ गंगी यह नहीं जानती थी कि पानी को उबालने से उसकी खराबी दूर होती है । इस प्रकार गंगी में एक गरीब, असहाय और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ विद्रोह करनेवाली स्त्री को हम देख सकते हैं ।

8. बसंत मेरे गाँव का PART -1

1. फूलदेई का त्योहार किस ऋतु में मनाया जाता है ?

   बसंत ऋतु में

2. फूल न मुरझाएँ ; इसकेलिए बच्चा क्या करते हैं ?

   फूलों को न मुरझाने रिंगाल से बनी टोकरियों में रखकर रात भर पानी से भरे गागरों के ऊँपर रखा जाता है ।

3. घरवाले बच्चों को दक्षिणा के रूप में क्या–क्या देते हैं ?

   गुड, चावल, दाल आदि

4. फूलदेई त्योहार में बडों की भूमिका क्या है ?

   बच्चों को सलाह देना

5. ' बसंत बौराने लगता है '– इसका मतलब क्या है ?

   बसंत ऋतु में पहाडी ढलानों पर फ्योंली और सरसों के पीले फूलों से शानदार पीलाई छा जाते हैं । बसंत की यह खूबसूरती मन को उन्मत्त करने लगता है ।

6. उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई को बच्चों को सबसे बडा त्यौहार मानते हैं । क्यों ?

   फूलदेई त्यौहार से जुडे फूल चुनने से लेकर सामूहिक भोज बनाने तक के सारे काम बच्चे करते हैं । इस त्यौहार के आयोजन में बडों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित रहती है । इसलिए फूलदेई को उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में बच्चों के बडे त्यौहार मानते हैं ।

7. रपट (उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई त्यौहार मनाया)

फूलदेई का जश्न धूमधाम से मनाया गया

स्थान : .... उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में इक्कीस दिनों से फूलदेई का त्योहार मना रहे थे । यह त्योहार पूर्ण रूप से बच्चों के द्वारा मनाया गया । बडों की भूमिका सिर्फ सलाह देना मात्र रहा । बच्चों ने रोज़ देर शाम तक रिंगाल से बनी टोकरियों में फूल चुने और गागरों में पानी भरकर उसके ऊपर रखे । रोज़ सुबह गाँव भर बच्चों की टोलियाँ घूमीं । पिछली शाम चुने गए फूल घरों की देहरियों पर सजाए गए । जिनके घरों में फूल सजाए गए उन्होंने बच्चों को चावल,गुड,दाल आदि दिए । दक्षिणा में मिली यह सामग्री पूरे इक्कीस दिन तक इकट्ठी की गई । फूलदेई की विदाई के साथ यह उत्सव कल समाप्त हुआ । अंतिम दिन कल इकट्ठी की गई सामग्रियों से सामूजिक भोज बनाया गया । त्योहार के दिनों में लोकगीतों की प्रस्तुति हुई थीं । नाटक,प्रतियोगिता,गरीब लोगों केलिए कपडा वितरण आदि विभिन्न कार्यक्रम इसके साथ चलाए गए ।

8. पोस्टर – फूलदेई समारोह

उत्तराखंड कला समिति के नेतृत्व में

सामूहिक फूलदेई त्योहार

2019 मार्च 22, शुक्रवार को देहरादूर गाँव में
सुबह 8 बजे से रात 12 बजे तक

उद्घाटन - महापौर

- फूलों की प्रदर्शनी
- लोकगीत प्रस्तुति
- सामूहिक भोज
- गरीबों केलिए कपडा वितरण

सबका हार्दिक स्वागत

PART -2

1. पशुचारक रास्ते में गाँववालों से क्या–क्या बेचते हैं ?
   वे जानवरों के साथ-साथ कीडाजडी,करण और चुरु जैसी दुर्लभ हिमालयी जडी व औषधियाँ भी बेचते हैं ।
2. पशुचारकों की खुशी का कारण क्या है ?
   महीनों बाद घर लौटने का समय आया है ।
3. पशुचारक अपनी पुरानी वसूली कब की जाती है ?
   बर्फीले मौसम में निचले इलाकों की ओर जाते समय
4. ' नकद–उधार के आंकडे कहीं दर्ज़ नहीं होते । '– यहाँ के लोगों की कौन–सी विशेषता यहाँ प्रकट होता है ?
   आपसी विश्वास रखनेवाले हैं ।
5. ठंड के मौसम में बर्फीले इलाकों से पशुचारक निचले इलाकों में क्यों उतरते हैं ?
   ठंड के मौसम में पहाडों के चरागाह बर्फ से ढक जाते हैं । तब अपनी जानवरों को चराने केलिए वहाँ के पशुचारक अपने जानवरों के साथ निचले इलाकों में उतरते हैं ।
6. अपने घर लौटने की खुशी उत्सव का माहौल रच देती है । पशुचारकों के महीनों तक के पहाडी जीवन पर टिप्पणी लिखें ।
   ठंड के मौसम में बर्फीले इलाकों से पशुचारक निचले इलाकों में उतरते हैं । महीनों तक फैले चरागाहों,घने जंगलों और अनजान बस्तियों में भटकने के बाद अपने घर लौटने की खुशी उत्सव का माहौल रच देती है । वे गीत गाते हैं, नाचते हैं । अपने साथ उनके भेड-बकरियाँ, घोडे-खच्चर, कुत्ते भी होले हैं । रास्ते में आनेवाले गाँवों से उनका लेन-देन भी होता रहता है । वे जानवरें के साथ-साथ कीडाजडी, करण और चुरु जैसी दुर्लभ हिमालयी जडी व औषधियाँ भी बेचते हैं । इन गाँवों से उनका सदियों का रिश्ता है ।
7. 'आपसी विश्वास के दम पर वर्षों से यहाँ लेन–देन चल रहा है ।'– यहाँ गाँववालों की कौन–सी विशेषता प्रकट होती है ?
   उत्तराखंड के हिमालयी अंचल के गाँववाले सीधे–सादे और ईमानदार हैं । वे किसीको धोखा देना नहीं चाहते हैं । वे पशुचारक के साथ जो नकद–उधार करते हैं, उसका कोई आंकडे कहीं दर्ज नहीं करते । वे आपसी विश्वास को बडा मोल देते हैं ।
8. 'जब तक हिमालय रहेगा ऋतुओं के बदलने का उल्लास बना रहेगा ।'- इसका क्या तात्पर्य है ?
   हमारे देश के ऋतु चक्र का आधार हिमालय है । बसंत, गर्मी, सर्दी, वर्षा आदि बारी–बारी आने का कारण हिमालय है ।

9. रपट (पशुचारक और गाँववालों के बीच का लेन-देन)

आपसी विश्वास के दम पर सदियों से व्यापार

स्थान : ...... उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में बसते पशुचारकों और गाँववालों के बीच आपसी विश्वास के बल पर सदियों से लेन-देन हो रहा है । सर्दी बढने पर जानवरों के साथ निचले इलाकों में उतरे पशुचारक गर्मी होने पर वापस अपने घर लौटते हैं । इस समय रास्ते में आनेवाले गाँवों से उनका लेन-देन चलता है । वे जानवरों के साथ -साथ दुर्लभ हिमालयी जडी और औषधियाँ भी बेचते हैं । इन गाँवों से उनका सदियों का रिश्ता है, इसलिए उसी समय पूरी कीमत चुकाने की ज़रूरत नहीं होती । बर्फीले मौसम में फिर निचले इलाकों में जाते वक्त पुरानी वसूली की जाती है । मज़े की बात है कि नकद-उधार के आंकडे कहीं दर्ज़ नहीं होते । केवल आपसी विश्वास के दम पर चलते यह व्यापार बिलकुल अलग ही है ।

10. पोस्टर (संदेश) points – प्रकृति और मनुष्य के आपसी संबंध

1. प्रकृति हमारी माँ, हम सबकी जान...
   करो इसका सम्मान,प्रकृति की रक्षा हमारी सुरक्षा ।
2. मनुष्य और प्रकृति का संबंध अटूट...
   प्रकृति नहीं है तो मानव भी नहीं ।
3. प्राकृतिक वस्तुओं का शोषण कम करो...
   प्राकृतिक दुर्घटनाओं से रक्षा पाओ ।
4. स्वच्छ प्रकृति स्वस्थ जीवन का आधार...
   प्रकृति के बिना मनुष्य का अस्तित्व नहीं ।
5. पहाडियों को गिराना, जंगल-पेडों की कटाई,
   जलस्रोतों व खेतों को मिटाना आदि बंद करो...
   प्रकृति का संतुलन कायम रखो ।
6. प्रकृति को संभालो...
   हमारेलिए... आगामी पीढी केलिए... ।

विश्व पर्यावरण दिवस – जून 5

11. वार्तालाप – पशुचारक और गाँववालों के बीच का लेन-देन

पशुचारक – नमस्ते भैया, क्या चाहिए आपको ?

गाँववाला – मुझे कुछ जडी-बूटियाँ चाहिए ।

पशुचारक – बताइए क्या-क्या चाहिए ? हमारे पास कीडाजडी, करण और चुरु हैं ।

गाँववाला – मुझे थोडा-सा कीडाजडी और चुरु चाहिए ।

पशुचारक – इतनी तो बाकी पडी है । यह तो 120 रुपए का है ।

गाँववाला – अब मेरे पास 100 रुपए ही हैं ।

पशुचारक – कोई बात नहीं, अगले साल बाकी दीजिए ।

गाँववाला – ठीक है । यह 100 रुपए ले लो, बाकी 20 रुपए अगले साल दे दूँगा ।

9. दिशाहीन दिशा PART -1

1. मोहन राकेश की बडी इच्छा क्या थी ?
   विशाल समुद्र-तट के साथ-साथ एक लंबी यात्रा करना
2. लेखक समुद्र-तट की यात्रा क्यों न कर न सके ?
   समय और साधन की कमी से
3. लेखक ने फौरन यात्रा करने का निश्चय क्यों किया ?
   नौकरी छोड देने की वजह से हाथ में पैसा आने के कारण
4. लोग गोआ जाना क्यों पसंद करते हैं ?
   गोआ में खुला समुद्र-तट है,एक आदिम स्पर्श लिए प्राकृतिक रमणीयता है और वहाँ जीवन बहुत सस्ता है-रहने-खाने की हर सुविधा वहाँ बहुत थोडे पैसों में प्राप्त हो सकती है ।
5. गोआ की ज़िंदगी बहुत सस्ती है । लेखक के इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ?
   लेखक के इस कथन से मैं सहमत हूँ । गोआ में रहने-खाने की हर सुविधा बहुत थोडे पैसों में प्राप्त होने से वहाँ जीवन सस्ता है ।
6. " घर में चलते समय मन में यात्रा की कोई बनी हुई रूप–रेखा नहीं थी । "– लेखक के इस कथन के आधार पर बताएँ कि किसी यात्रा पर जाने से पहले यात्रा की रूप–रेखा बनाना ज़रूरी है ?
   किसी यात्रा केलिए जाने से पहले रूप–रेखा बनाना ज़रूरी है । क्योंकि कहाँ जाना है, कितने दिन रुकना है, क्या–क्या देखना है इन सबकी रूप–रेखा पहले ही तैयार नहीं की तो हम अपनी रुचि के अनुसार सब कुछ देख नहीं पाएँगे ।
7. घने शहर की छोटी-सी तंग गली में पैदा हुए लेखक को कन्याकुमारी के समुद्र-तट के प्रति आत्मीयता का अनुभव होने का आधार क्या हो सकता है ?
   लेखक का जन्म शहर की छोटी–सी तंग गली होने से उनके मन में विपरीत के प्रति आकर्षण हो सकता है । छोटी गली में पैदा होने के कारण विशाल समुद्र–तट के प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक ही है ।

PART -2

1. मल्लाह अब्दुल जब्बार की वेशभूषा कैसी थी ?
   वह सिर्फ एक तहमद पहना था। उसकी दाढी और छाती के सारे बाल सफेद हो चुके थे।
2. अविनाश ने अपना कोट उतारकर मल्लाह को दे दिया । इसकेलिए क्या –क्या कारण हैं ?
   सर्दी बढ रही थी पर मल्लाह के पास चादर नहीं था । अविनाश कुछ समय और झील का सैर करना चाहता था ।
3. उसके खामोश हो जाने से सारा वातावरण ही बदल गया । वातावरण की खामोशी लेखक पर कैसा प्रभाव पडा ?
   गज़लों में मग्न रहने से बाहर की दुनिया से वे कुछ समय से अनजान थे । गज़ल रुकते ही वे बाहर का वातावरण यानी रात, सर्दी, नाव का हिलना और झील का विस्तार महसूस करने लगे ।
4. भोपाल के आम जीवनी की ज़िंदगी में गज़लों का क्या रिश्ता है ?
   गज़ल एक तरह का उर्दू प्रेम गीत है । गज़ल अपनी सरलता और संगीतात्मकता के कारण साधारण अनपढ लोग गज़लें पसंद करते हैं । मीठे स्वर में लय के साथ गाने लायक गज़लें सबके मन को भाती हैं । गज़लों से खूब परिचित होने से साधारण लोग भी गज़लें रटते रहते हैं । गज़ल गाते-गाते लोग एक अद्भुत दुनिया में पहुँच जाते हैं ।
5. ' मगर बात करने की जगह उसने मेरा बिस्तर लपेटकर खिडकी से बाहर फेंक दिया और खुद मेरा सूटकेस लिए हुए नीचे उतर गया । ' अविनाश के इस आचरण से मोहन राकेश और अविनाश के बीच की मित्रता का क्या अंदाज़ा मिल जाता है ?
   इससे पता चलता है कि अविनाश और मोहन राकेश के बीच घनिष्ठ मित्रता है । अविनाश चाहता है कि उस दिन राकेश जी अपने साथ रहे । लेखक के बारे में निर्णय लेने का पूर्ण स्वतंत्रता अविनाश को था ।
6. 'मगर आप चाहें तो चंद गज़लें तरन्नुम के साथ अर्ज कर सकता हूँ ।' इस कथन से आम जनता के साथ गज़लों के रिश्ते का क्या परिचय मिलता है ?
   गज़लों के प्रति आम जनता का लगाव ही यहाँ प्रकट होता है ।
7. ' उसके खामोश हो जाने से सारा वातावरण ही बदल गया । '– इससे आपने क्या समझा ?
   गज़लों में मग्न रहने से बाहर की दुनिया से लेखक और मित्र कुछ समय केलिए अनजान थे । गज़ल रुकते ही वे बाहर का वातावरण यानी रात, सर्दी, नाव का हिलना और झील का विस्तार महसूस करने लगे । किसीमें मग्न होने से हम बाहर की बातों से अनजान रहना स्वाभाविक है ।

8. मल्लाह अब्दुल जब्बार की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

मोहन राकेश के यात्रावृत्त दिशाहीन दिशा का पात्र है अब्दुल जब्बार नाम का एक बूढा मल्लाह । वह गरीब , परिश्रमी और सादा जीवन बितानेवाला व्यक्ति था । लेखक के मित्र का अनुरोध मानकर रात के ग्यारह बजे के बाद वह नाव लेकर आया । आधी रात के समय कडी सर्दी में वह केवल एक तहमद पहनकर नाव चलाया । उस शांत वातावरण में लेखक का मित्र गाना सुनना चाहे तो उसने नाव चलाते हुए एक के बाद एक करके अच्छे गज़लें गाए । वह बडा विनयशील था । उसका स्वर काफी अच्छा था और सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था । उसकी दाढी और छाती के सारे बाल सफेद हो चुके थे । बूढा होने पर भी पतवार चलाते समय उसकी मांसपेशियाँ इस तरह हिलती थीं जैसे उनमें फौलाद भरा हो । उसके गायन ने लेखक और मित्र के सैर को यादगार बना दिया ।

SREEJITH P. KOVOOR VARKALA, SCRT45 P. 9539/5454

9. पटकथा - नाव में ताल यात्रा करना

स्थान –भोपाल ताल के एक नाव ।

समय – रात के साढे गयारह बजे ।

पात्र – लेखक, अविनाश और मल्लाह । (लेखक और अविनाश 50 साल के कुर्ता और पतलून पहने हैं। मल्लाह 60 साल के, सिर्फ एक तहमद पहना है ।)

घटना का विवरण – लेखक और अविनाश नाव में लेटे ताल की सवारी करने लगते हैं । तब लेखक मल्लाह से कुछ पूछने लगता है ।

संवाद –

लेखक – आधी रात को बुलाने से आपको कोई तकलीफ हुई है क्या ?

मल्लाह – क्या तकलीफ है साब ? यही तो हमारा गुज़ारा है न ?

लेखक – आपका नाम क्या है ?

मल्लाह – जी, मेरा नाम अब्दुल जब्बार है ।

लेखक – क्या आप इस ताल के पास ही रहते हो ?

मल्लाह – हाँ साब । मैं यहाँ पास ही रहता हूँ ।

लेखक – सुना है, आप जैसे मल्लाह अच्छे गायक भी हैं । क्या आप हमारेलिए एक गाना गाएँगे ?

मल्लाह – मैं गा तो नहीं सकता, हुज़ूर ।

लेखक – कोशिश तो करो यार । देखो कितना अच्छा नज़ारा है यह ! इस वक्त एक गाना भी हो तो मज़ा आता ।

मल्लाह – आप चाहें तो चंद गज़लें तरन्नुम के साथ अर्ज कर सकता हूँ, माशा अल्लाह चुस्त गज़लें हैं ।

लेखक – ज़रूर ज़रूर ! आपको जैसे आता है वैसा गाओ ।

मल्लाह – ठीक है साब ।

(मल्लाह उनकेलिए गज़लें सुनाने लगता है ।)

10. पटकथा – सर्दी बढने से मल्लाह लौटने के बारे में कहने पर

स्थान – भोपाल ताल के एक नाव ।

समय – रात के साढे गयारह बजे ।

पात्र - लेखक, अविनाश और मल्लाह ।

(लेखक और अविनाश 50 साल के कुर्ता और पतलून पहने हैं । मल्लाह 60 साल के, सिर्फ एक तहमद पहना है ।)

घटना का विवरण– लेखक और अविनाश नाव में लेटे ताल की सवारी करने लगते हैं । तब लेखक मल्लाह से कुछ पूछने लगता है ।

संवाद -

मल्लाह – अब हम लौट चलें साहब ।

अविनाश - क्यों ? क्या हुआ ?

मल्लाह – सर्दी बढ रही है न ?

अविनाश - तो क्या ?

मल्लाह – जी,मैं अपनी चादर साथ नहीं लाया ।

अविनाश - (कोट अतारकर उसकी तरफ बढाते हुए)लो,तुम यह पहन लो । अभी हम लौटकर नहीं चलेंगे ।

मल्लाह - (कोट पहनते हुए)ठीक है साहब । यही तो काफी है ।

अविनाश – तुम्हें घर जाने की कोई आवश्यकता है क्या ?

मल्लाह - नहीं साहब । आपकी सैर खतम होने पर ही मैं जाऊँगा ।

अविनाश – ऐसा हो तो तुम्हें कोई गालिब की चीज़ याद हो,तो सुनाओ ।

मल्लाह - ज़रूर साहब ।

(मल्लाह वह कोट पहनकर फिर से नाव खेने लगता है ।)

11. मोहन राकेश की डायरी (नाव यात्रा)

तारीख: ....

आज मेरेलिए कैसा दिन था, बता नहीं सकता । आज मैं कन्याकुमारी की यात्रा में था । भोपाल स्टेशन पहुँचने पर मेरा मित्र मुझे मिलने आया और उसके साथ एक रात रहने का निश्चय किया । रात को ग्यारह के बाद हम घूमने निकले । झील के पास आते ही कुछ देर नाव लेकर झील की सैर करने की इच्छा हुई । एक नाव मिल गई । नाव में बैठे यात्रा का मज़ा लूट रहा था । तभी मित्र के अनुरोध पर मल्लाह ने हमारेलिए कुछ गज़लें सुनाईं । कितना मीठा था उनका स्वर । रात के साथ ठंड बढने लगी । लेकिन लौटने का मन नहीं हुआ । इसलिए मित्र ने अपना कोट उतारकर उसको दिया । कुछ देर फिर सैर की । चार बजे ही लौटे । आज की यह मज़ेदार नाव यात्रा मैं कैसे भूलूँ ?

SREEJITH R KOVOOR VARKALA, SCRT45 Ph- 9567224545

10. बच्चे काम पर जा रहे हैं **PART - 1** (कोहरे से ढँकी सडक पर बच्चे ------------- काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे ?)

1. बच्चे काम पर कब जा रहे हैं ?

सुबह-सुबह

2. बच्चे काम पर क्यों जाते होंगे?

अकसर ऐसे बच्चे गरीब परिवार में जन्मे होंगे । अपनी आर्थिक कठिनाई उन्हें काम पर जाने को मज़बूर करते हैं । अनपढ माता –पिता बच्चों को काम पर भेजना पसंद करते हैं । कभी अनाथत्व के कारण, भूख सह न पाने से काम पर जाते होंगे ।

3. ' हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह '- ऐसा क्यों कहा गया है ?

छोटी उम्र में ही बच्चों को काम पर भिजवाने को कवि आज के समय की सबसे भयानक समस्या बताते हैं । बच्चों से काम करवाना कानूनी अपराध है । फिर भी कई बच्चे अपने परिवार की भूख मिटाने केलिए काम पर जाने को मज़बूर हो रहे हैं । अत: यह देश की डरावनी स्थिति है । क्योंकि बचपन का समय उनके भविष्य निर्माण का है, न कि काम करने का ।

4. बातों को सवाल की तरह लिखा जाने से क्या फायदा है ?

छोटी उम्र में ही बच्चों को काम पर भिजवाने को कवि आज के समय की सबसे भयानक समस्या बताते हैं । इसलिए कवि इसे विवरण की तरह लिखना भयानक होने से सवाल की तरह लिखने की कोशिश करते हैं । बातों को सवालों की तरह लिखा जाने से आम जनता का ध्यान इस तरफ आकर्षित हो जाएगा । समस्या को प्रस्तुत करने में समाज की ओर समस्या उठाना ही सशक्त मार्ग है ।

5. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि श्री.राजेश जोशी की सुंदर कविता है बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं । इसमें कवि बाल मज़दूरी पर तीखा प्रहार करते हैं ।

कवि कहते हैं कि बडे सबेरे कोहरे से ढँकी सडक पर बच्चे काम करने केलिए जा रहे हैं । भूख और गरीबी के कारण कई बच्चों को काम पर जाना पडता है । यह हमारे समय की सबसे बडी समस्या है । क्योंकि यह उनको काम करने की उम्र ही नहीं है । यह इतनी भयानक समस्या है कि विवरण की तरह नहीं लिखा जा सकता । इसे एक सवाल की लिखना चाहिए । हमें चिंता करना है कि बच्चों के हँसने-खेलने की उम्र में उन्हें काम पर क्यों जाना पड रहा है ? कवि के अनुसार समस्याओं को सवालों की तरह लिखा जाने से आम जनता का ध्यान इस तरफ आकर्षित हो जाएगा । काम पर जानेवाले बच्चे सुरक्षित रहने व शिक्षा पाने के हकों से वंचित रह जाते हैं । आज के बच्चे कल के नागरिक हैं । इसलिए उनको बचपन में ही शारीरिक एवं मानसिक विकास का अवसर मिलना चाहिए । इस अभिशाप को जड से मिटाने हम सब मिलकर कोशिश करना पडेगा ।

समाज की एक बडी समस्या को कविता के द्वारा प्रस्तुत करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है । कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है ।

PART – 2 (क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं ------------- सारे मदरसों की इमारतें)

1. ' क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें '- कवि इससे क्या कहना चाहते हैं ?

गरीबी के कारण बच्चे स्कूल छोडकर, खेल छोडकर माँ-बाप के साथ काम पर जाते हैं । गेंद एक खिलौना है । बचपन की खुशी से वंचित बच्चों के बारे में कवि यहाँ कहते हैं ।

2. ' क्या दीमकों ने खा लिया है सारी रंग–बिरंगी किताबों को '–इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

जो उम्र बच्चों के पढने–लिखने की है उस समय में वे किताबों को छोडकर काम पर जा रहे हैं । इस तरह बच्चे शिक्षा से वंचित हो रहे हैं, पुस्तकों और पढाई के मनमोहक दुनिया से अलग हो रहे हैं । इसलिए कवि आशंकित हैं कि उनकी किताबों ने खा लिया होगा ।

3. ' क्या काले पहाड के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने '– इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

बचपन बच्चों केलिए खेलने का समय है । लेकिन बडे सबेरे ही काम पर जाने कारण उन्हें खेलने का समय नहीं मिलता है । इसलिए कवि आशंकित हैं कि उनके सारे खिलौने नष्ट कर दिए गए हैं ।

4. ' क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं सारे मदरसों की इमारतें '– इन पंक्तियों द्वारा कवि क्या कहना चाहते हैं ?

बचपन मुख्य रूप से स्कूल में जाकर पढने का समय है । लेकिन काम पर जाने के कारण बच्चों की स्कूल जाने का अवसर नहीं मिल रहा है । इसलिए कवि आशंकित हैं कि उनके स्कूल भूकंप में पडकर ढह गए हैं ।

5. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि श्री.राजेश जोशी की सुंदर कविता बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं । इसमें कवि बाल मज़दूरी पर तीखा प्रहार करते हैं ।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि अपनी आशंका प्रकट करते हुए पूछते हैं कि बच्चों के पढने-खेलने के उम्र में उन्हें काम पर क्यों जाना पड रहा है ? क्या इनके खेलने की सारी गेंदें अंतरिक्ष में गिर गई हैं ? क्या इनके पढने की सारी रंग-बिरंगी किताबों को दीमकों ने खा लिया है ? क्या इनके खेलने के सारे खिलौने काले पहाड के नीचे दब गए हैं ? क्या इनके पढने के सारे मदरसों की इमारतें किसी भूकंप में ढह गए हैं ? कवि हमारे सामने यह खतरनाक स्थिति पेश करते हैं कि भूख और गरीबी के कारण आज भी कुछ बच्चों को रंग-बिरंगी किताबें,गेंदें,खिलौने,स्कूली इमारतें,हँसी-खेल और पढाई का संसार छोडकर काम पर जाना पडता है । गरीब बच्चे अपनी और अपने घर की तकलीफों के कारण बचपन की खुशियाँ छोडकर काम पर जाते होंगे । इनकी समस्याओं को खतम करने का उत्तरदायित्व समाज पर है । गैर कानूनी होने पर भी बालश्रम आज भी संसार के कई देशों में चालू है । इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का आह्वान है यह कविता ।

समाज की एक बडी समस्या को कविता के द्वारा प्रस्तुत करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है । कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है ।

SREENITH KOVOOR VARKALA, SCRIBE, Ph- 9567124545

PART - 3 (क्या सारे मैदान, ------------- सारी चीज़ें हस्बमामूल)

1. ‘क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन खतम हो गए हैं एकाएक ’– इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

खेलने की जगहों से बच्चे वंचित हैं। उन्हें ऐसी जगहों पर जाने का अवसर नहीं मिलता है। वे तो काम पर जा रहे हैं।

2. ‘भयानक है लेकिन इससे भी ज़्यादा यह / कि हैं सारी चीज़ें हस्बमामूल ’- इस पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

काम पर जाने से बच्चे रंग-बिरंगी किताबें, खिलौने, हँसी-खेल की दुनिया, पढाई का संसार आदि से वंचित होते हैं। ऐसे उन्हें इस दुनिया में कुछ भी बचा नहीं। इसलिए कवि के मत में इन बातों को मामूली प्रथा या कायदा मानना इससे भी भयानक है।

3. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि श्री.राजेश जोशी की सुंदर कविता बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं। इसमें कवि बाल मज़दूरी पर तीखा प्रहार करते हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि अपनी आशंका प्रकट करते हुए पूछते हैं कि क्या बच्चों के खेलने के मैदान, घरों के आँगन और सारे बगीचे एकाएक खतम हो गए हैं? अगर ऐसा है तो इस दुनीया में फिर बचा ही क्या है? यह स्थिति बहुत भयानक है। कवि के अनुसार इसे मामूली प्रथा या कायदा मानना और भी भयानक है। काम पर जाने के कारणखेलने से मिलते बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास के अवसर से वे वंचित हो रहे हैं। दुनिया की हज़ारों सडकों से गुज़रते हुए बच्चे बहुत छोटे बच्चे काम पर जा रहे हैं। यह दृश्य ज़रूर ही खतरनाक है। गरीब बच्चे अपनी और अपने घर की तकलीफों के कारण बचपन की खुशियाँ छोडकर काम पर जाते होंगे। इनकी समस्याओं को खतम करने का उत्तरदायित्व समाज पर है। गैर कानूनी होने पर भी बालश्रम आज भी संसार के कई देशों में चालू है। इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का आह्वान है यह कविता।

समाज की एक बडी समस्या को कविता के द्वारा प्रस्तुत करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है। कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है।

PART - 4 (पर दुनिया की हज़ारों सडकों से ------------- काम पर जा रहे हैं।)

1. यह कविता किस सामाजिक समस्या की चर्चा कर रही है?

बालश्रम

2. बालश्रम के प्रति आपके विचार क्या-क्या हैं ?

बालश्रम एक भीषण सामाजिक समस्या है। गरीबी, बेकारी, निरक्षरता आदि अनेक कारणों से भारत में आज भी बालश्रम कायम है। देश के गरीब माँ-बाप तनतोड मेहनत करने पर भी आजीविका चलाने में लाचार होने से वे अपनी संतानों को स्कूल भेजने के बदले काम पर भेजते हैं। ऐसे बच्चे पढने-खेलने और उससे मिलनेवाले उज्ज्वल भविष्य नष्ट करके काम पर जाना खतरनाक स्थिति है। हमें नए भारत का निर्माण करना है तो बालश्रम को जड से उखाडकर फेंकना चाहिए।

3. दुनिया की कई जगहों में बच्चे काम पर जाने केलिए मज़बूर हैं। इसके क्या-क्या कारण होंगे ?

अकसर ऐसे बच्चे गरीब परिवार में जन्मे होंगे। अपनी आर्थिक कठिनाई उन्हें काम पर जाने को मज़बूर करते हैं। अनपढ माता-पिता बच्चों को काम पर भेजना पसंद करते हैं। कभी अनाथत्व के कारण,भूख सह न पाने से काम पर जाते होंगे। गरीबी, आर्थिक कठिनाई, बेरोज़गारी, स्कूलों की कमी, माँ-बाप की निरक्षरता, शक्तिहीन कानून व्यवस्था, अनाथत्व, काम करने में विवश माता-पिता आदि इसके मुख्य कारण हैं।

4. बच्चों को अपने बचपन में क्या-क्या सुविधाएँ मिलनी चाहिए ? अपना विचार प्रकट करें।

बचपन की स्वतंत्रता, माँ-बाप की प्यार और देख-रेख मिलने, पौष्टिक भोजन मिलने, मित्रों के साथ मिलने-खेलने, स्कूल में जाकर पढाई करने, किताबों की मनमोहक दुनिया में घूमने, प्रकृति की सुंदरता का आनंद लेने तथा शारीरिक व मानसिक करने जैसै अधिकार उन्हें मिलना चाहिए।

3. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि श्री.राजेश जोशी की सुंदर कविता बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं। इसमें कवि बाल मज़दूरी पर तीखा प्रहार करते हैं।

अंतिम पंक्तियों में कवि कहते हैं कि बालश्रम के प्रति हमारा दृष्टिकोण चाहे कुछ भी हो, यह अक सच्चाई है कि दुनिया भर के कई छोटे-छोटे बच्चे काम पर जा रहे हैं। भूख या गरीबी ही वह कारण है जो कुछ बच्चों को काम पर जाने केलिए विवश करता है। बचपन ज़िंदगी का वह समय है जब बच्चों को सारी परेशानियों और दुखों से बेखबर हो हँसना-खेलना चाहिए। लेकिन खिलौनों और रंग-बिरंगी किताबों की दुनिया कुछ बच्चों के भी नसीब में हैं। कवि हमारे समाज की इस असमानता पर दुखी है।

समाज की एक बडी समस्या को कविता के द्वारा प्रस्तुत करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है। कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है।

7.पोस्टर (points) संदेश – बालश्रम के विरुद्ध

1. बालश्रम दुनिया की एक भीषण समस्या है...
   बच्चों को काम केलिए नहीं,स्कूल में भेज दें।
2. बालश्रम रोको...
   बच्चों को पढने,खेलने और बढने दें।
3. बालश्रम कानूनी अपराध है...
   बालश्रम करानेवालों को कठिन दंड दें।
4. आज के बच्चे कल के नागरिक हैं...
   मिटाओ जड से बालश्रम,बचाइए भविष्य अपने देश की।
5. जिस देश के बच्चों का कोई भविष्य नहीं...
   उस देश की अपनी कोई भविष्य नहीं।
6. बालश्रम एक अभिशाप है...
   एकसाथ हम इस सामाजिक समस्या का उन्मूलन करें।

विश्व बालश्रम विरुद्ध दिवस – जून 12

11. गुठली तो पराई है PART – 1 (बुआ की नसीहतें)

1. ‘ अरी बेवकूफ यह घर तो पराया है ।’– बुआ के इस कथन से क्या आप सहमत हैं ? क्यों ?
   बुआ के इस कथन से मैं सहमत नहीं हूँ । बुआ के अनुसार लडकी पराए घर की अमानत है । ससुराल (पति का घर) ही उसका अपना घर है । परिवार में लडके को मिलती स्वंतत्रता, प्यार और देख-रेख लडकी को नहीं मिलती । लडकी के साथ ऐसा भेदभाव रखना कभी उचित नहीं है । दोनों को समान मानना ही एक स्वस्थ समाज केलिए हितकर होगा ।
2. ‘ सोचती रही कि यह घर उसका नहीं ?’ गुठली को क्यों ऐसा सोचना पडता है ?
   बुआ ने गुठली को पराए घर की अमानत बताया था । माँ भी बुआ का साथ देते हुए उससे बातें की । इसलिए उसे ऐसा सोचना पडा ।
3. माँ की बातों से गुठली और भी हताश हो गई । हताश होने के पीछे क्या कारण है ?
   बुआ ने गुठली को पराए घर की अमानत बताया था । माँ भी बुआ का साथ देते हुए उससे बातें की । गुठली ने सोचा माँ बुआ की बातों को इनकार करेगी, पर ऐसा न हुआ । इसलिए वह बहुत हताश हो गयी ।
4. ‘ यूँ तो बड़ी बुआ गुठली को अच्छी लगती हैं पर उनसे बात करना उसे कुछ खास पसंद नहीं ।’ क्यों ?
   बुआ सदा उपदेश देती रहती है । हर बात में मनाही करती रहती है । उनका कहना है कि गुठली पराई घर की अमानत है । इसलिए गुठली बुआ से बात करना पसंद नहीं करती थी ।
5. ‘ अरी बेवक़ूफ़ यह घर तो पराया है ।’ बुआ गुठली से ऐसा क्यों कहती है ?
   सामाजिक रिवाज़ों के अनुसार घर में पुरुष की प्रधानता है । लडकी को अपना घर में कोई स्थान नहीं है । उसे पराए घर की अमानत समझती है । गुठली शादी के बाद ससुराल जाएगी । तब पति का घर उसका अपना घर बनेगा । इसलिए बुआ गुठली से ऐसा कहती है ।
6. ‘ लगा उसे जैसे उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खींच ली गई हो ।’- गुठली ऐसा क्यों लगती है ?
   बुआ गुठली से कहती है कि गुठली का घर अपना नहीं पराया है । उस समय वह दुखी होकर अपनी माँ की ओर देखती है । लेकिन माँ बुआ की बातों से हामी भरती है । माँ को भी बुआ का साथ देते देखकर गुठली को लगा कि अपने पैरों के नीचे से ज़मीन खींच ली गई है ।

7. पटकथा (बुआ की नसीहतें)

स्थान - घर के अंदर ।
समय - शाम के साढे पाँच बजे ।
पात्र - गुठली और बुआ (गुठली 14 साल की लडकी, चुडीदार पहनी है। बुआ 50 साल की औरत, साडी पहनी है ।)
घटना का विवरण - गुठली अपनी मर्ज़ी से कुछ करने लगी तो बुआ हमेशा की तरह उसे डाँटते हुए नसीहतें देना शुरू करती है ।

संवाद -

बुआ - गुठली ज़रा इधर आओ ।
गुठली - बताइए ... क्या बात है बुआ ?
बुआ - यह क्या है बेटी ? तुम्हें ऐसा मत करना है, ऐसा पट-पट मत बोलना है, धम-धम मत चलना है ।
गुठली - बुआ, आप बार-बार मुझसे ऐसा क्यों कहती है ?
बुआ - अरे, तू एक लडकी है न ?
गुठली - क्या लडकी होने से कोई दोष है ?
बुआ - अरे छोरी, लोग नाम तो तेरी माँ को ही रखेंगे । कहेंगे कुछ सिखाया ही नहीं । ऐसा ही करोगी क्या अपने घर जाकर ?
गुठली - (क्रुद्ध होकर) आप क्या कह रही है ? अपना घर ? यही तो मेरा घर, जहाँ मैं पैदा हुई ।
बुआ - (हँसती हुई) अरी बेवकूफ यह घर तो पराया है । बाकी लडकियों की तरह तू भी किसी और की अमानत है । ससुराल ही तेरा असली घर होगा । मैं भी इसी घर में पैदा हुई थी, पर अब तेरे फूफाजी का घर ही मेरा घर है । कुछ समझी ?
गुठली - मैं नहीं मानूँगी ।
बुआ - तुम भी बडे होकर अपने घर चली जाओगी ।
गुठली - यही है मेरा, मैं इसे छोडकर कहीं नहीं जाऊँगी ।
(गुठली रोती हुई वहाँ से भाग जाती है ।)

8. गुठली की डायरी (बुआ की नसीहतें)

तारीख : ……………………..

आज मुझे बहुत दुखदायक दिन था । ज़िंदगी में पहली बार एक लडकी होने पर निराशा का अनुभव होने लगती है । लडके जैसे भी चलें और जैसे भी बातचीत करें । लडकियों को कुछ भी करने की स्वतंत्रता नहीं । बुआ ने कहा कि मेरा घर अपना नहीं है,वह तो पराया है । पर इस घर में ही मैं पैदा हुई हूँ । फिर यह घर मेरेलिए क्यों पराया हुआ है ? बुआ के अनुसार लडकियाँ ससुराल को अपना घर मानें । मुझे सब बातें समझने की अकल नहीं आई है । मेरी प्रतीक्षा यह थी कि इस विषय पर माँ मेरी सहायता करती । किंतु वे भी बुआ का साथ देता देखकर मुझे बडा आघात हुआ है । मैं अपना दुख किससे कहूँ ? काश मैं भी एक लडका होता तो कितना अच्छा होता !

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45 M. 9562224545

9. वार्तालाप – माँ और गुठली के बीच

माँ - गुठली, तू इधर आकर बैठ रही है ?

गुठली - क्या मैं यहाँ बैठ भी नहीं सकती ?

माँ – क्या हुआ बेटी, तू नाराज़ क्यों है ?

गुठली – किसीको मुझपर प्यार नहीं, मैं पराई हूँ न ... ?

माँ – किसने बताया ? तू तो हमारी प्यारी है न ?

गुठली – तो क्यों माँ बुआ के साथ मुझे पराई मानती ?

माँ – बेटा बुआ की बात का बुरा मत मान । और जो कल होना है उसे लेकर आज क्यों परेशान होना ।

गुठली – नहीं माँ, मैं नहीं मानती । मुझे कहीं नहीं जाना है ।

माँ – छोड बेटा ... आ, आकर चाय पीलें ।

PART - 2 (शादी के कार्ड पर गुठली का नाम नहीं छपा)

1. ‘ गुठली का नाम कार्ड पर नहीं था ’– कारण क्या था ?

घर की छोरियों का नाम कार्ड पर नहीं छपते थे ।

2. ‘ भूला नहीं है रे ... अपने घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते ।‘ ताऊजी इस विचार पर आपकी राय क्या है ?

गुठली के परिवार में शादी के कार्ड में वधु को छोडकर अन्य लडकियों के नाम छपवाने की परंपरा नहीं थी । पर सारे लडकों का नाम छपवाते थे । इसलिए गुठली का नाम नहीं छपवाया । ऐसा भेदभाव रखना कभी ठीक नहीं । मेरी राय में लडकी और लडका बराबर है । बुद्धि और क्षमता में दोनों समान है, इसलिए लडके को जो प्यार, सुविधाएँ और हक दिया जाता है, वे सब लडकियों को भी मिलना है । लडके-लडकियों के बीच भेदभाव रखना एक स्वस्थ समाज केलिए लायक नहीं है ।

3. ‘ पर ताऊजी उसमें भइया के छोटे–से बेटे का भी नाम है जो अभी बोल भी नहीं सकता तो मेरा ...।‘ यहाँ कौन–सी सामाजिक अव्यवस्था की झलक मिलती है ?

यहाँ परिवार की लडका–लडकी के भेदभाव की ओर संकेत है । लडकी को पराए घर की संपत्ति मानी जाती है । उसके साथ घरवाले उपेक्षा का व्यवहार करते हैं । परिवार में लडकों को जो स्थान मिलता है वह लडकियों को नहीं मिलता ।

4. पटकथा (शादी के कार्ड पर गुठली का नाम नहीं छपा)

स्थान - घर की बैठक ।

समय - शाम के साढे पाँच बजे ।

पात्र - गुठली 14 साल की लडकी,चुडीदार पहनी है ।
ताऊजी 50 साल के आदमी,धोती और कुर्ता पहने है ।

घटना का विवरण - ताऊजी बैठक की कुर्सी पर बैठे पान खा रहे हैं । गुठली शादी के कार्ड लेकर आती है । उसके चेहरे पर निराशा है ।

संवाद -

गुठली - ताऊजी, क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकती हूँ ?

ताऊजी – क्या बात है बेटी ? जल्दी बताओ ।

गुठली - देखिए ताऊजी, भइया मेरा नाम कार्ड पर छपवाना भूल गया ।

ताऊजी – (हँसते हुए) भूला नहीं है बेटी ।

गुठली - फिर ?

ताऊजी – अपने घर की छोरियों का नाम कार्ड पर नहीं छपते ।

गुठली - पर ताऊजी, उसमें भइया के छोटे बेटे का नाम भी है, जो अभी बोल भी नहीं सकता, तो मेरा ...

ताऊजी – तो क्या हुआ ? तेरा नाम तो तेरे अपने कार्ड में छपेगा, यहाँ नहीं ।

गुठली - लेकिन ताऊजी ... दीदी के कार्ड में सिर्फ मेरा नाम नहीं है । यह तो बिलकुल अन्याय है ।

ताऊजी – अरे छोरी ... मुझे गुस्सा मत करना । अब चल भाग यहाँ से ।

(गुठली रोती हुई वहाँ से चलने लगती है ।)

5. गुठली की डायरी (शादी के कार्ड पर गुठली का नाम नहीं छपा)

तारीख : ....

दीदी की शादी की तैयारियाँ हो रही थी । घर मेहमानों से भरा था । हम सब बडी खुशी में थी । इसी बीच शादी के कार्ड छपके आए । बडी उत्सुकता के साथ मैंने कार्ड खोला । दुख सह न पाई । मेरा नाम कार्ड में न था । भैया के छोटे बच्चे का नाम भी छपा था जो अभी बोल भी नहीं सकता । मैंने सोचा , भैया भूल गया होगा । मैंने बहुत दुखी होकर ताऊजी से शिकायत की । उनका विचार है कि घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते । मैं रोने लगी तो बुआ ने डाँटते हुए कहा , शादी के घर में मनहूसियत मत फैलाना । मैं मानने को तैयार नहीं थी । मुझे दुखी देखकर आखिर माँ ने अपने हाथ से कार्ड में मेरा नाम लिख दिया । छपाई जैसा नहीं तो भी माँ के प्यार से मैं मान गई । लडकी के साथ अपने घर में भी इतना विवेचन क्यों ? इस रूढी के खिलाफ ज़रूर आवाज़ उठाना है । आज का यह दिन मैं कभी नहीं भूलूँगी ।

SREEJITH P, KOVOOR VARKALA, 9567224545

PART – 3 (रात को घर की रूढी के खिलाफ प्रतिक्रिया करने की सोच करना, घरवालों को एक सबक सिखाना)

1. कहानी में किसका संकेत है ?

वर्तमान समाज में स्त्री–पुरुष समता का अभाव है ।

2. अगर गुठली के स्थान पर आप होते तो क्या करते ?

अगर गुठली के स्थान पर मैं होता तो ज़रूर इसके विरुद्ध आवाज़ उठाता । समझाऊँगा कि संविधान में लडका और लडकी को समान अधिकार है ।

3. घरवाले सब मुँह बाए गुठली को देखते रहने के कारण क्या –क्या होंगे ?

घरवालों के गुठली को पराए घर की अमानत बताने के बदले उसने अपने को मेहमान कहते हुए घर के काम करने से इनकार कर लेता है । लडके केलिए ही जन्मगृह अपना है और घर का देखभाल करना उसका कर्तव्य है । ऐसा कहते हुए गुठली टिफिन –बैग उठाकर स्कूल केलिए निकलने लगा तो घरवाले सब मुँह बाए उसको देखता रहा ।

4.' देर रात तक यही सोचती रही गुठली ।'- गुठली के मन में क्या–क्या विचार आए होंगे ?

उसे पराए अमानत माननेवालों को कुछ सबक सिखाना है । लडकी केलिए जन्मगृह पराया घर हो तो वहाँ के काम उसे करने की कोई ज़रूरत नहीं । भइया केलिए ही यह घर अपना है तो वही सारा काम करना होगा ।

5. सामाजिक असमानता के खिलाफ गुठली अपने ढंग से आवाज़ उठाती है। असमानताओं के विरुद्ध आप क्या–क्या कर सकते हैं?

सामाजिक असमानताओं के विरुद्ध आवाज़ उठाना हरेक नागरिक का कर्तव्य है । अपने माँ –बाप एवं रिश्तेदारों को यह समझाना चाहिए कि लडका–लडकी एक समान है । सामाजिक असमानता का मुख्य कारण शिक्षा का अभाव है । सभी को शिक्षा मिलने से इस समस्या का एक हद तक हल हो जाता है ।

6. टिप्पणी – लडकियों को समानता का अधिकार है

भारतीय संविधान के अनुसार लडके-लडकियों को समानता का अधिकार है । लेकिन लडकियों को अकसर भेदभाव सहना पडता है । यह आज के समाज की बडी समस्या है । लडकी को जन्म से लेकर अंत तक घर का काम करना पडता है । सभी कहते हैं कि ससुराल ही लडकियों का असली घर है । इसलिए उसे अपने घर में अन्य होने का अनुभव होता है । समाज में हो या परिवार में हो लडकों के समान लडकियों को उचित स्थान नहीं मिलता है । समाज में भी यही भेदभाव हम देख सकते हैं । उसे स्वतंत्र रूप से चलने का अधिकार भी नहीं है । उन्हें लडकों के जैसे पढाई की सुविधाएँ नहीं मिलती हैं । आज नारी समाज के सभी क्षेत्रों में कर्मरत हैं । उसे समाज से अलग रखना उचित नहीं है । गर्भ में ही लडकियों की हत्या करने का निर्मम व्यवहार भी कभी-कभी चलता है । यानी वे लडकियों को जन्म देना भी नहीं चाहते । लजकियों के प्रति हीन भाव रखना ठीक नहीं है । लडका-लडकी एक जैसा है । लडकियों को समानता का अधिकार मिलना चाहिए ।

7. टिप्पणी - गुठली की चरित्रगत विशेषताओं पर

कनक शशि की गुठली तो पराई है कहानी का मुख्य पात्र है गुठली नामक की लडकी । वह एक संयुक्त परिवार का अंग है । घर में भाई को मिलती स्वतंत्रता भी गुठली को नहीं मिलती है । घर में उसको स्वतंत्र रूप से चलने या बातें करने का अधिकार नहीं था । घरवालों के अनुसार वह पराए घर की अमानत है । दीदी की शादी के कार्ड पर गुठली का नाम नहीं छपवाने से वह इसके खिलाफ आवाज़ उठाती है । अंत में वह घर में हो रहे लडका-लडकी भेदभाव पर सबको सबक सिखाने का निश्चय करती है । सभी से ऐसा कहती है कि वह एक मेहमान है और मेहमानों से काम करवाना अच्छी बात नहीं है । गुठली सामाजिक असमानता की ओर अपने ढंग से आवाज़ उठानेवाली आज के ज़माने की साहसी लडकियों की प्रतिनिधि है ।

8. वार्तालाप – गुठली और सहेली के बीच

गुठली – आज मैं बहुत निराश हूँ यार ।

सहेली – क्या हुआ गुठली,क्यों उदास हो ?

गुठली – बताओ यार,क्या स्त्री होना कोई पाप है ?

सहेली – मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया । बुआ की नसीहतें आज भी हुआ क्या ?

गुठली – हाँ । उसने कहा मेरेलिए अपना घर पराया है । मैं किसी और की अमानत है । मुझे लगता है माँ भी बुआ के पक्ष में है ।

सहेली – ऐसा कहने को क्या हुआ ?

गुठली – आज माँ ने कहा,बुआ का कहना सही है । कल की बातों को लेकर आज परेशान न होना । बचपन के दिन फिर लौटके नहीं आनेवाले हैं, इसे जी भरके जी लें ।

सहेली – गुठली,तुम निराश मत बनो,उन्हें कुछ सबक सिखाओ ।

गुठली – मैं भी ऐसा सोचती हूँ ।

9. गुठली का पत्र (अपनी हालत पर सहेली के नाम)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

बुआ हमेशा उपदेश देती रहती है । वे कहती हैं कि लडकी तो पराए घर की अमानत है । ससुराल ही लडकियों का अपना घर है । घर में स्वतंत्रता से कुछ करने,चलने या बातचीत करने का भी हक लडकियों को नहीं । दीदी की शादी के कार्ड छपके आई तो सिर्फ मेरा नाम उसमें नहीं था । भइया के छोटे बेटे का भी नाम उसमें था । ताऊजी का कहना है कि घर की लडकियों का नाम कार्ड पर नहीं छपते । ये लोग ऐसा क्यों कहते हैं ? मेरी समझ में नहीं आती। क्या लडकी होना कोई बुरी बात है ? क्या लडकियों केलिए हमारे संविधान में अलग नियम है ?

आगे मैं ऐसी व्यवहार सह नहीं सकती । लडकी-लडके से कभी कम नहीं है । इस रूढी के विरुद्ध मैं ज़रूर आवाज़ उठाऊँगी । मेरी प्रतीक्षा है कि तुम ज़रूर कुछ बताएगी । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारी सहेली
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

10. गुठली की डायरी (रात को घर की रूढी के खिलाफ प्रतिक्रिया करने की सोच करना)

तारीख : ……………….

आज मैं बहुत उदास हूँ । बुआ की नसीहतें ज़ारी रही हैं । माँ भी बुआ का साथ देना मेरेलिए दुखी की बात है । उनके विचार में जन्मगृह मेरेलिए पराया घर ही है । सब मुझे पराई अमानत मानती हैं । ऐसा हो तो मैं अपने घर का मेहमान है न ? मेहमान को काम करने की क्या ज़रूरत है ? भैया केलिए तो यह घर अपना होगा न ? ऐसा हो तो घर का सारा काम वही करे । कल से मुझे एक अलग लडकी बननी है । घर का काम करवाना बंद करना होगा । ऐसे उन्हें ज़रूर सबक सिखाना है । आगे कभी वे मुझे पराई अमानत न कहे । ऐसा सोचते ही मुझे खुशी आ जाती है । देख लेना कल क्या होगा ?

11. गुठली की डायरी (घरवालों को एक सबक सिखाना)

तारीख : ……………….

आज मैं बहुत खुश हूँ । मैंने आज अपने घरवालों को एक सबक सिखाया । यहाँ के लोग मुझे पराए घर की चीज़ समझती थी । अब समझ में आए होंगे । लडकियाँ केवल घर का काम काज निपटाने केलिए नहीं हैं । उनका भी अपना अस्तित्व है । क्या ज़माना है यह ? हम बहिनों को भी अपने भाइयों की तरह अपने घर में रहने का अधिकार ज़रूर है । इसलिए मैंने घरवालों केलिए एक गंभीर समस्या पेश करते हुए कहा, मैं इस घर का मेहमान हूँ और मुझसे काम करवाना उचित बात नहीं है । यह तो भइया का अपना घर है वही यहाँ का सारा काम करे । मेरी बातें सुनकर सब चकित हो गए । किसीके पास उत्तर नहीं था । मुझे विश्वास है,वे ज़रूर कुछ सोचेंगे । मैं यहाँ से शुरू करना चाहती हूँ । मैं पढ़ूँगी और दिखाऊँगी कि लडकी भी लडके के समान कुछ कर सकती है । बहुत नींद आ रही है । बस, बाकी कल ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRHSS VK 9562154545